जून 2008 ▪ Rs.15/-

चन्दामामा

MY CANDYMAN ADVENTURES

बदमाश पड़ोसी

Kuch bhi karega for CANDYMAN?

ITC Limited

Help your Candyman friend find her candies.

Log on to www.mycandymanclub.com

Just three steps for winning many exciting Candyman Prizes:

- Help your Candyman friend find her Natkhat Mango candies.
- Complete the slogan 'I like Candyman because...' in not more than 10 words.
- Complete all the details about yourself and send it by June 30, 2008 to: **Indira Valson, Chandamama India Ltd., 6th floor, Block A, JVLPlaza, 626, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 18.**

I like Candyman because ______

Name: ______ ☐Boy ☐Girl Age: ______ Address: ______

______ Ph. No.: ______

School: ______ Class: ______ E-mail ID: ______

TERMS AND CONDITIONS

1. This contest is open to all residents of India.
2. The participants understand that sending entries implies acceptance to the terms and conditions of this contest.
3. The entries for this contest shall be sent by ordinary post to Indira Valson, Chandamama India Ltd., 6th Floor, Block A, JVL Plaza, 626, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 18 on or before 30th June, 2008.
4. Incomplete and/ or illegible entries shall be disqualified.
5. This contest is not open to employees of ITC Limited and Chandamama India Ltd and their family members.
6. ITC Limited reserves the right to extend, cancel, discontinue, withdraw, change, alter or modify this contest or any of the terms thereof with or without notification and without assigning any reason.
7. The winners of this contest shall be selected by a panel of judges appointed by ITC Limited.
8. The decision of ITC Limited will be final and binding with regard to any dispute arising out of this contest and is non-contestable. No correspondence shall be entertained in this regard.
9. The prizes shall be sent to the winners at the addresses specified in the entries sent by them and ITC Limited shall not be responsible if the winners are unavailable at such addresses.
10. ITC Limited and Chandamama India Ltd shall not be liable for incorrectly addressed or undelivered entries or for disruption, delay or non-receipt of entries due to postal delays or any other reason.
11. Prizes are non-transferable, non-negotiable, subject to availability and cannot be exchanged for cash.
12. ITC Limited shall not be liable for any loss expense or damage which may be suffered in connection with this contest or accepting or using any prize given under this contest.
13. All disputes in connection with or arising out of this contest are subject to the jurisdiction of courts located at Bangalore.

DRAFTFCB + ULKA 85004A

चन्दामामा सम्पुट-५९ जून २००८ सञ्चिका - ६

विशेष आकर्षण

पृथ्वी लोक की नीलांजना (वेताल कथाएँ) ...१९

पंजाब की एक लोक कथा ...३५

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-९ ...४२

रामायण (सुंदरकाण्ड-१) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* इच्छा, जो पूरी हुई ...०७
* लाभ-हानि ...०९
* संग्रहकर्ता-संस्करण का विमोचन ...१२
* भयंकर घाटी-३४ ...१३
* घटोत्कच ...२६
* बीरबल की कहानियाँ-१० ...३१
* भारत दर्शक ...३४
* समाचार झलक ...३९
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३० ...४०
* कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-९ ...४६
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-५ ...५१
* ओलिम्पिक ज्योति तथा मशाल ...४४
* जातक कथा ...५४
* अफवाह ...६३
* अपराजेय गरुड़ ...६७
* भारत के धरोहर स्थल ...७१
* बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२
* आप के पन्ने ...७३
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

चाहे किसी प्रकार की हीन स्थिति में आ जाये, साहसी अपने साहस को नहीं छोड़ता। जैसे अग्नि ज्वाला को औंधे मुँह रखने पर भी उसकी ज्वाला नीचे की ओर नहीं फैलती।

पृथ्वी को शीतल करें

मस्जिद में दीप जलाने से पहले अपने घर में दीया जलाओ। यह आम लोकोक्ति, सम्भवतः पर्यावरण और इसकी सुरक्षा की अनिवार्य आवश्यकता के सन्दर्भ में, अधिक प्रासंगिक है। प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दुरुपयोग पृथ्वी के लिए, जो हम सबका आवास-स्थल है, सर्वनाश की धमकी है। कुछ दिनों से भूमण्डलीय तापन सामान्य चर्चा का विषय बन गया है। इस विषय के सम्बन्ध में अनेक दस्तावेज तैयार किये जा चुके हैं; भूमण्डलीय तापन के परिणाम स्वरूप ग्लेसियरों के गलन पर दस्तावेज़ बनाये जा रहे हैं।

भूमण्डलीय तापन वातावरण में व्याप्त गैसों के कारण होता है, जैसे मानव श्वास से निकला कार्बन डायोक्साइड, स्वचालित वाहनों से उत्सर्जित कार्बन मोनोक्साइड तथा कारखानों से निकले गैस मेथन और नाइट्रस ऑक्साइड। इन गैसों से पृथ्वी के ऊपर एक आवरण बन जाता है जो वातावरण में निकले ताप को रोक लेता है। इस प्रकार भूमण्डलीय तापन पृथ्वी ग्रह के लिए सबसे अधिक गम्भीर खतरा बन गया है।

यदि अण्टार्कटिक का हिम विस्तार भूमण्डलीय तापन के कारण पिघल कर समुद्र में आ जाये तो समुद्र का तल १० मी. (३२ फुट से अधिक) ऊँचा उठ जायेगा और तटीय क्षेत्रों की भूमि पर के सब पेड़-पौधे, मकान आदि बह जायेंगे। जान-माल की व्यापक क्षति होगी। आपकी पत्रिका ने पहले ही कुछ स्तम्भों में इस स्थिति की चर्चा की है जिसमें यह बताया गया है कि वैज्ञानिक भूमण्डलीय तापन की वृद्धि को रोकने तथा पृथ्वी के पर्यावरण में संतुलन स्थापित करने के साधनों और तरीकों की खोज के प्रयास कर रहे हैं।

अब यह राष्ट्रों और शासकों का दायित्व नहीं है, बल्कि धरती पर पैदा होनेवाले हर इनसान का दायित्व है जिसे, धरती को बचाने के आन्दोलन को मजबूत बनाने में अपना यथायोग्य योगदान करना है। हमें इसे एक चेतावनी के रूप में लेना चाहिये और भविष्य की ओर देखना चाहिये जिसमें आशा की एक रूपहली किरण दिखाई देती है। कुछ दिन पहले हमारी नज़र एक ऐसे नारे पर पड़ी जिससे व्यक्तिगत भूमिका का महत्व स्पष्ट होता है। ''दुनिया को बदलने के लिए, पहले अपने इर्दगिर्द की दुनिया को बदलो!''

इसलिए, आयें, ''पृथ्वी को शीतल करने के लिए'' हम सब हर तरह का प्रयास करें जैसाकि चेन्नई के इस क्षेत्र में सक्रिय एक गैर सरकारी संगठन 'एक्सनोरा' ने सलाह दी है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com

चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Redd (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar)
Gandhi Ayya, P. Mahesh
Layout Design: R. Sudha
Assistants: D. Revathy, B.A. Hemalata Malini
Research : R. Vasugi

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar,** ***National Sales Manager***
91 99620 7014
ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, ***Manager-Circulation & Institutional Sales***
91 99625 67860
fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav,** ***Asst. Manager - Circulation***
91 9271720669
CHANDAMAMA INDIA LTD., B3, Luric Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MDC Andheri (East), Mumbai-400093
91 22 28312872 / 2831849
rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma,** ***Circulation Manager-North***
91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi 110001
Bangalore : **P. Murali,** ***Asst. Circulation Manager-Karnataka***
91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash,** ***Circulation Manager-East***
91 98351 82202
ananth.prakash@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Online and Interactive : **Surajit Agarwal**
91 99620 70015
surajit.agarwal@chandamama.com
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,
Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

शुल्क:

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा **'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'** के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र :

आज से लगभग ३२-३३ वर्ष पूर्व जब मैंने होश संभाला तो घर में *चन्दामामा* को पाया। मेरी मम्मी इसकी प्रशंसिका थी और मुझे इसकी विद्वता भरी शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाया करती थी। फिर मैं *चन्दामामा* का मुरीद हो गया। आज ४१ वर्ष की उम्र में भी आलम यह है कि महीने भर इसका बेसब्री से इंतज़ार होता है। मेरे बच्चे भी इसे बेहद पसंद करते हैं। तीन पीढ़ियाँ आपकी *चन्दामामा* की दीवानी हैं। सभी बाल पत्रिकाओं में *चन्दामामा* इस प्रकार से है जैसे असंख्य तारों के बीच चंद्रमा। *चन्दामामा* की शिक्षाप्रद कहानियाँ सत्य, ज्ञान, कर्मठता का बोध कराती हैं। कलियुग में भी सतयुग का एहसास कराती हैं। *चन्दामामा* को बच्चों से भी ज्यादा युवा और बुजुर्ग पसन्द करते हैं क्योंकि ये सबकी प्रेरणा हैं, गुरु हैं और सच्ची मार्ग दर्शिका हैं।

- सीप गुप्ता, राजस्थान

मैं ६२ साल का हूँ और अपने कॉलेज के समय से इसे पढ़ता आया हूँ। यह बेझिझक कहा जा सकता है कि इस पत्रिका ने हिन्दी को जीवित रखने में अपना योगदान किया है। साथ ही साथ हमारी संस्कृति के स्वाद को बराबर बनाये रखा है। यहाँ तक कि पात्रों के नाम भी ग्राम्य जीवन तथा इतिहास से उठाये होते हैं।

जब भी इसे पढ़ता हूँ मुंबई में रहने के बावजूद अपने बचपन और गाँव में पहुँच जाता हूँ। लोकल ट्रेन में पढ़ता हूँ तब लोग स्मित मुस्कान से देखते हैं मानो कहते हों – इस उम्र में भी ! मैं भी वैसी ही मुस्कान लौटाता हूँ – ''पढ़ो तो जानो।'' भगवान इस पत्रिका को चिरायु करें।

- सुपारस सुराणा, मुम्बई

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

इच्छा, जो पूरी हुई

मणिपुर में शिव नामक एक व्यक्ति रहा करता था। वह श्मशान का रखवाला था। वह ग़रीब था, पर उसका मन बड़ा ही पवित्र और निर्मल था। अपने पेशे को बड़ी ही जिम्मेदारी के साथ संभालता था। उसे दैव समान मानता था।

सगे लोगों से बिछड़ जाने के कारण जो दुख में डूब जाते थे, उन्हें वह सांत्वना देता था। शव को जलाने के लिए जो लकड़ियाँ या रक़म उनसे मिलनी चाहिये, उनके लिए वह उन्हें तंग नहीं करता था। जो देते थे, वह ले लेता था। जब तक शव पूरी तरह से जल नहीं जाता, तब तक वह वहीं बैठा रहता था।

जितना उसके पास होता था, उसी से वह काम चला लेता था। इस वजह से वह सदा तृप्त रहता था। बस, उसकी एकमात्र इच्छा थी, हरिद्वार जाने की और गंगा में स्नान करने की। पर इसके लिए रकम की ज़रूरत थी। उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि हरिद्वार की तीर्थयात्रा कर सके।

एक दिन उसे मालूम हुआ कि गाँव की सरहद पर इमली के पेड़ों के बीच एक अनाथ का शव पड़ा हुआ है। वह वहाँ गया, शव को अपने कंधों पर डाल कर श्मशान ले आया और लकड़ियाँ इकट्ठी करके उसका दहन संस्कार किया। वह जब तक श्रद्धापूर्वक यह काम करता रहा, तब तक एक व्यक्ति उसे दूर से ध्यानपूर्वक देख रहा था।

काम पूरा करके शिव श्मशान के पास ही के कुएँ पर नहाकर घर जाने निकल पड़ा। तब वह व्यक्ति उससे मिला और कहा, ''शिव, मैं लक्ष्मीपुर गाँव का हूँ। मेरा नाम हरिनारायण है। तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुना। अब खुद देख भी लिया। मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे मन में एक प्रबल इच्छा है। उसे पूरी करने ही यहाँ आया हूँ।''

रघुनंदन

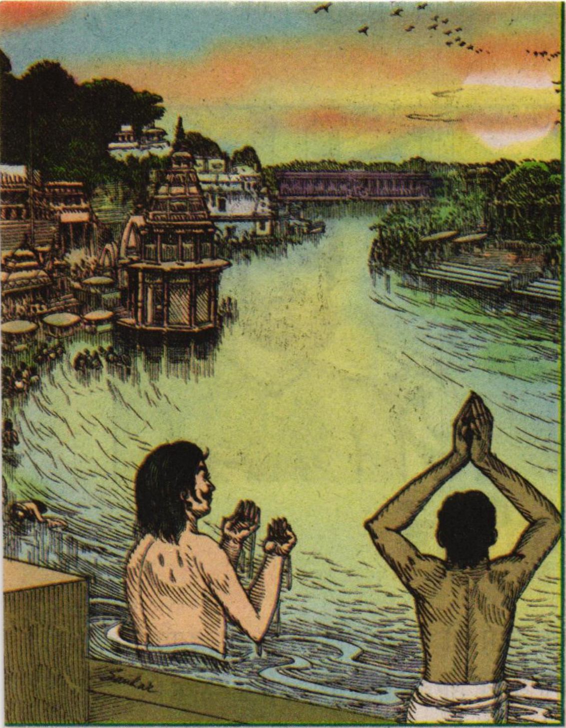

आकर रुकी। उसमें हरिनारायण बैठा हुआ था। उसने शिव को सादर बुलाया और उसे अपने बग़ल में बिठाया। फिर बग्घी निकल पड़ी।

एक महीने तक यात्रा के बाद वे हरिद्वार पहुँचे। गंगा नदी में स्नान किया और गंगा माँ की पूजा की। शिव को लगा कि उसका जन्म सार्थक हो गया। लौटते समय अन्य कई तीर्थस्थानों के भी दर्शन किये और दोनों लक्ष्मीपुर पहुँचे।

घर जाने के पहले शिव ने हाथ जोड़कर हरिनारायण से कहा, ''महाशय, मैंने सोचा नहीं था कि मैं हरिद्वार के दर्शन कर पाऊँगा। आपकी कृपा से मेरी यह इच्छा पूरी हो गयी। आजीवन मैं आपका ऋणी रहूँगा।''

हरिनारायण ने कहा, ''शिव, मेरी इतनी प्रशंसा मत करना। तुम्हें हरिद्वार दिखाने के पीछे मेरा थोड़ा-सा स्वार्थ भी है।''

''मैंने आपसे प्रार्थना नहीं की, फिर भी मुझे आप हरिद्वार ले गये। इसमें भला आपका क्या स्वार्थ हो सकता है?'' शिव ने कहा।

''हाँ, शिव, मैं सच बता रहा हूँ। व्यापार करके मैंने करोड़ों रुपये कमाये। पर, मेरा मन अशांत है। मेरे जीवन में स्नेह की कमी है। अपने भी पराये हो गये हैं। मेरे दो बेटे हैं, पर दोनों स्वार्थी हैं। मेरे मर जाने के बाद मेरी जायदाद पर अधिकार पाने के लिए तैयार बैठे हैं। मेरे क्षेम के बारे में वे कभी सोचते नहीं। वे मेरी मृत्यु की प्रतीक्षा में हैं। कल मैं मर जाऊँगा तो पवित्र मन से वे मेरा दहन संस्कार करेंगे, इसका मुझे विश्वास नहीं। अगर

''महाशय, मेरी समझ में नहीं आया कि आप कहना क्या चाहते हैं? कृपया साफ-साफ कहियेगा'', शिव ने पूछा।

''मुझे मालूम हुआ है कि तुम हरिद्वार जाकर गंगा में स्नान करना चाहते हो। तुम 'हाँ' कह दोगे तो अपने साथ तुम्हें हरिद्वार ले जाऊँगा'', हरिनारायण ने स्पष्ट किया।

''महोदय, इससे बढ़कर भाग्य क्या और हो सकता है।'' आंसू भरे नयनों के साथ हाथ जोड़ते हुए उसने कहा।

हरिनारायण ने प्यार से उसकी पीठ को थप-थपाते हुए कहा, ''अगले पंचमी के दिन हरिद्वार जाने निकलेंगे। तैयार रहना।'' हरिनारायण यह कहकर चला गया।

पंचमी के दिन शिव के घर के सामने एक बग्घी

वे करेंगे भी तो इससे मुझे संतृप्ति नहीं मिलेगी। तभी मुझे तुम्हारे बारे में मालूम हुआ। तुम जैसे अच्छे आदमी को हरिद्वार ले जाऊँगा, तो उससे मुझे पुण्य मिलेगा। जब कभी मेरी मौत होगी, तब तुम्हें ही मेरे दहन संस्कार करने होंगे। इसके लिए आवश्यक तैयारियाँ अभी कर दूँगा।'' हरिनारायण ने चिंता-भरे स्वर में कहा।

हरिनारायण की बातें सुनकर शिव का मन हिल उठा। उसने कहा, ''मालिक, आप धर्मात्मा हैं। आपको कभी भी, ऐसी स्थिति से गुज़रना नहीं पड़ेगा। मुझ जैसे गरीब को हरिद्वार ले गये, इसका अच्छा प्रतिफल आपको अवश्य प्राप्त होगा। वह अवश्य ही आपके बेटों में परिवर्तन ले आयेगा।'' शिव जब यों कह रहा था, तब हरिनारायण के दोनों बेटे आये और पिता के पैरों पर गिर पड़े और कहने लगे, ''पिताजी, हमें माफ़ कीजिये। आपको ऐसी दुःस्थिति से गुज़रने नहीं देंगे। अज्ञानवश हमने आपके साथ अब तक दुर्व्यवहार किया। आगे से आपकी किसी भी आज्ञा को नहीं टालेंगे, कोई कमी आने नहीं देंगे।''

जब हरिनारायण के दोनों बेटों को मालूम हुआ कि उनके पिता श्मशान के एक रखवाले को लेकर हरिद्वार गये हुए हैं, और इस विषय को लेकर गाँव के लोग उनके बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे हैं, तो शर्म के मारे उन्होंने सिर झुका लिया। उन्हें लगा कि लोग उनके इस दुर्व्यवहार पर उनपर थूक रहे हैं। जब वे शर्मिंदा होकर उनसे माफी माँगने गये तब उन्होंने छिपकर पिता की बातें सुनीं।

बेटों में आये परिवर्तन को देखकर हरिनारायण बहुत ही प्रसन्न हुआ। और शिव से बोला, ''शिव, देखी भगवान की लीला! जैसे ही मैंने तुम्हारे हरिद्वार जाने की इच्छा पूरी की, भगवान ने मेरी भी इच्छा पूरी कर दी। मेरे बेटों में परिवर्तन लाकर अपनी महिमा दिखायी।''

''मालिक, मुझे हरिद्वार दिखाने का आपने जो पुण्य किया, वह थोड़े ही व्यर्थ जायेगा। सदा भले आदमी का भला ही होगा।'' शिव ने कहा।

हरिनारायण ने शिव के लिए एक घर बनवाया और उसके जीवन-निर्वाह का प्रबंध किया।

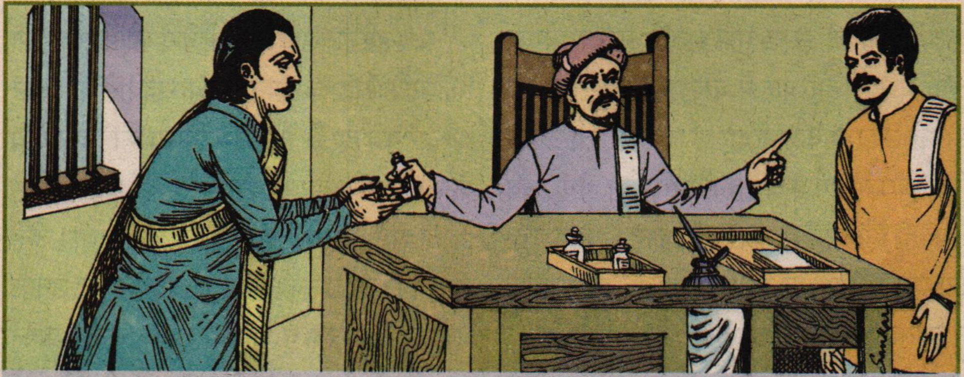

लाभ-हानि

कामेश मनौती पूरी करने एक दिन रामेश को लेकर पैदल चल पड़ा। उसे ब्रह्मपुर का मंदिर जाना था। रास्ते में बारिश से दोनों भीग गये। कामेश लगातार छींकने लगा, तब रामेश ने उसे सलाह दी, ''हर दिन स्नान के बाद तुलसी के पत्ते खाना। जुकाम से बचोगे। मैं खुद इसका उदाहरण हूँ।''

''तुलसी के पत्ते खाने मात्र से क्या छींकें रुक जायेंगी? अपनी व्यर्थ राय मुझपर थोपना मत।'' कामेश ने चिढ़ते हुए कहा।

ब्रह्मपुर पहुँचकर दोनों वैद्य के पास गये। रामेश ने वैद्य से कहा, ''मैंने इससे कहा कि हर रोज़ तुलसी के पत्ते खाने से जुकाम से बचोगे। पर, यह विश्वास ही नहीं करता। कृपया इसे समझाइये।'' उसने कामेश की शिकायत की।

वैद्य ने उसे क्रोध से देखते हुए कहा, ''मेरे पास आनेवाले अधिकाधिक जुकाम से ही पीड़ित रोगी हैं। मैं इसे रोकने के लिए अचूक दवा देता हूँ'', कहते हुए उसने तीन दिनों की दवा दी।

कामेश, रामेश की हार पर खुश हुआ और दवा खा ली। दवा लेने के बाद भी वह छींकने लगा तो रामेश बोला, ''बता चुका हूँ दवा लेने के बाद भी छींकें आती रहेंगी। मेरी मानो, हर रोज़ तुलसी के पत्ते खाना शुरू कर दो।''

''बाप रे, तुम तो तुलसी के पत्तों पर, ज़ोर देते जा रहे हो।'' चिढ़ते हुए कामेश ने कहा। जब दोनों मंदिर की सीढ़ियों पर चलने लगे तब एक आदमी लगातार छींकता रहा। रामेश उसे तुलसी के पत्ते खाने की सलाह देने लगा। उस समय धनराज नामक एक व्यक्ति कामेश को प्रणाम करते हुए कहने लगा, ''एक साधु ने कहा है कि इस मंदिर में आनेवाले किसी भक्त से बीस अशर्फ़ियाँ लेकर व्यापार करोगे तो काफी धन कमाओगे। क्या आप मेरी सहायता कर सकेंगे?''

रामेश को सताने का अच्छा मौका कामेश

किशोर कुमार

को मिला। उसने रामेश को दिखाते हुए उस व्यक्ति से कहा, ''तुम एक-एक करके उस के पास आदमी भेजते जाओ और हर कोई उससे यह पूछे कि जुकाम का क्या उपाय है। फिर उससे दान माँगे। वह हरेक को एक अशर्फी देगा।''

धनराज ने कामेश के अनुसार एक-एक करके बीस आदमियों को उसके पास भेजा। रामेश ने धैर्य के साथ उन्हें तुलसी के पत्तों को खाने की सलाह दी। एक ने कहा, ''हमारे गाँव में तुलसी के पौधे नहीं हैं, क्या मैं उनके बदले आंवले के पत्ते खा सकता हूँ?'' एक और ने कहा, ''मेरी स्मरण शक्ति कमज़ोर है। क्या हर दिन मेरे घर आकर याद दिला सकते हो?''

वे रामेश का मखौल उड़ाते रहे, पर वह नाराज़ नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद एक आदमी ने धनराज को रामेश के पास लाकर कहा, ''ये महाशय ही आपका मज़ाक उड़ाने के लिए आप के पास आदमियों को भेज रहे हैं।''

रामेश ने धनराज को ग़ौर से देखा। धनराज की समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे। पर अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''हम जो भी करते हैं, उससे होनेवाले लाभ और हानि एक समान होने चाहिये। अपनी ही बात पर डटे रहोगे तो तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। इससे तुम हँसी के पात्र बन जाओगे। तुम यह जानो, इसी के लिए मैंने यह नाटक किया।''

''तुलसी की चिकित्सा से एक को भी लाभ होगा तो पर्याप्त है। इस पर मेरा कोई मखौल उड़ाये भी तो मुझे कोई हानि नहीं पहुँचेगी।'' रामेश ने हँसते हुए कहा।

तब धनराज ने हाथ जोड़कर कहा, ''उस आदमी का धन मुझे नहीं चाहिये, जो आपका मखौल उड़ाता है। उससे मेरा लाभ नहीं होगा। मुझे आप माफ कर दीजिए।''

रामेश ने उसे बीस अशर्फियाँ देते हुए कहा, ''तुम व्यापार शुरू कर दो। जिस काम को अच्छा समझते हो, उसके बारे में अधिकाधिक लोगों से कहते रहना।''

फिर एक बार कामेश, रामेश के हाथों हार गया, उसका चेहरा फीका पड़ गया।

संग्रहकर्त्ता-संस्करण का विमोचन

सत्रह अप्रैल २००८ चन्दामामा तथा जियोडेसिक ग्रूप ऑफ कम्पनीज़, मुम्बई के लिए एक चिरस्मरणीय दिवस था, क्योंकि इस दिन इसकी ६० वीं जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित इसके संग्रहकर्त्ता-संस्करण का मुम्बई में आयोजित एक भव्य समारोह में श्री अमिताभ बच्चन द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर श्री अमिताभ बच्चन ने कहा कि चन्दामामा उसके लिए अनजान नहीं है, क्योंकि 'एक समय' लखनऊ में उसके निवास पर अन्य पत्रिकाओं के बीच वह इसे देखता था। उन्हें इसे पढ़ने में आनन्द आया था, इसलिए अब उनकी कामना थी कि उनके पोते-पोतियाँ इसे पढ़ना आरम्भ करें। संस्थापक बी. नागि रेड्डी को श्रद्धांजलि देते हुए श्री बच्चन ने कहा कि श्री रेड्डी को बाल-साहित्य, फिल्म-उद्योग की सेवाओं के लिए तथा जन-समुदाय के हितार्थ अस्पतालों के निर्माण के लिए सदा के लिए याद किया जायेगा। उन्होंने कहा कि श्री रेड्डी एक विजनरी, एक द्रष्टा थे।

सम्पादक-प्रकाशक श्री विश्वम ने इस अवसर पर संस्थापक श्री नागि रेड्डी तथा श्री चक्रपाणि के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित मिडिया के सदस्यों तथा अन्य लोगों से अपील की कि वे भारतीय महाकाव्यों तथा प्राचीन पारम्परिक गौरव गाथाओं के धरोहर पर आधारित भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के मिशन को अपना दायित्व समझें जिससे यहाँ का प्रत्येक बच्चा अपनी मातृभूमि पर गर्व कर सके।

चन्दामामा इंडिया लि. के सी.ई.ओ. श्री एल. सुब्रमन्यन ने कहा कि संग्रहकर्ता- संस्करण लाखों भारतीयों को, जो चन्दामामा को पढ़ते हुए बड़े हुए हैं, अतीत की स्मृति के गलियारों की सैर का आनन्द देगा।

कॉफी-टेबुल आकार के १९६ पृष्ठ के इस ग्रंथ में मिलेंगे पिछले ६० वर्षों के अंकों में प्रकाशित विभिन्न शैलियों की चुनीन्दी कथाओं के अतिरिक्त, शब्दों और चित्रों में चन्दामामा का इतिहास तथा कुछ रंगारंग आवरण चित्रों की प्रतिकृतियाँ, जो सब मिलकर यथार्थ में इसे एक संग्रहकर्ता-संस्करण का औचित्य प्रदान करते हैं।

भयंकर घाटी

34

(भूत भगानेवालों के चंगुल से निकलकर केशव और उसके मित्रों ने भयंकर घाटी में जगभोजी और उसके शिष्य का सम्भाषण सुना। उनको मृगराज भी दिखाई दिया। घाटी के परे, ब्रह्मपुर का राजा भी सेना सहित आया हुआ था। वह अपने गुरु से यह परामर्श कर रहा था कि उस घाटी में कैसे प्रवेश किया जाये। बाद में-)

कुछ चर्चा के बाद ब्रह्मपुर के राजा ने कहा, "गुरुवर्य, अब तक जगभोजी शायद जान गया होगा कि हम आ रहे हैं, उस हालत में उसके घाटी छोड़कर भाग जाने का डर है।"

राजगुरु ने कुछ सोचकर सिर हिलाते हुए कहा, "महाराज, कोई ऐसी बात नहीं होगी। यह सोचना गलत जरूर है कि जगभोजी हमारे आने के बारे में बेखबर है। लेकिन फिर भी वह घाटी छोड़कर इतनी जल्दी भागनेवाला नहीं है, क्योंकि जंगल में कल्पक-वल्ली को पकड़ने के समय जो बातें उसने कही थीं, उसे उसकी सहेलियों ने साफ़ सुना था। आगामी अमावस्या से पहले उसकी दीक्षा समाप्त नहीं होगी। तब तक चाहे कुछ भी हो, वह इस भयंकर घाटी में ही रहेगा। यहाँ से वह जरूर नहीं जायेगा। हमलोगों के आने की खबर पाकर यदि वह अन्तिम समय में भागना भी चाहे, तो बाहर

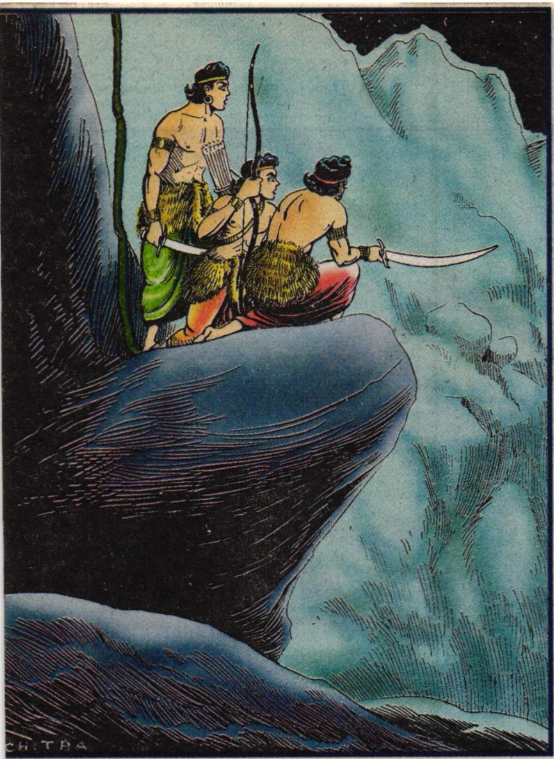

जाने के सभी मार्गों पर हमारा पहरा है। गुरु मौनानन्द और जंगली गड़ेजंग, उसके प्रयत्न को सफल न होने देंगे।''

जैसा कि राजगुरु ने कहा था, गुरु मौनानन्द और जंगली गड़ेजंग ने भयंकर घाटी से जिस जिस रास्ते से भागा जा सकता था, उस उस रास्ते में पहरा रख रखा है। मौनानन्द के साथियों में मुख्य हैं, बिड़ाली और श्वानकर्णी, और जंगली गड़ेजंग के साथियों में मुख्य हैं, नर माँस भक्षकों का नेता चण्डमण्डूक।

ब्रह्मपुर राजा के साथ इनके अलावा बड़ी सेना भी थी। उसमें गज और अश्व सेना भी थी। जंगली गोमान्ग जिस ध्वनि को सुन रहा था, वह हाथियों के गले में बंधी घंटियों की थी।

ज्यों ज्यों रात बीतती जाती थी, त्यों त्यों नीचे के पत्थरों पर बैठे केशव और उसके मित्रों को तरह तरह की आवाज़ें सुनाई पड़ती जाती थीं, चमचमाती चाँदनी में उनको नीचे की घाटी साफ़ दिखाई दे रही थी।

जयमल्लु घाटी की ओर कुछ देर तक ध्यान से देखता रहा और सोचता रहा, फिर बोला, ''केशव! इस चाँदनी में, यहाँ से इस घाटी में उतरना कोई उतना कठिन काम नहीं है। मेरा ख्याल है कि इस मृगराज को सवेरा होने से पहले ही मारकर उसके चमड़े को पहनना अच्छा है। सबेरा होते होते, शायद जगभोजी को मालूम हो जाये कि हम यहाँ हैं।''

''जैसा तुम कह रहे हो, इस काम को जितनी जल्दी पूरा कर लिया जाये, उतना ही अच्छा है। मेरा भी यही विचार है। मुझे यह भी सन्देह हो रहा है कि इस भयंकर घाटी के चारों ओर कुछ और लोग भी हैं, जो हमसे पहले इस घाटी में उतरना चाह रहे हैं। हम नहीं जानते कि वे शत्रु हैं, या मित्र। अगर हम उनसे पहले ही घाटी में जाकर अपना काम कर लें तो उसी में बुद्धिमानी होगी।'' केशव ने कहा।

फिर तीनों ने, जंगली गोमान्ग के पास जितने जहर-बुझे बाण थे, उन्हें आपस में बाँट लिया। फिर, छोटे बड़े पत्थरों के बीच में से बेल की सहायता से वे घाटी में सुरक्षित उतर गये।

घाटी में सर्वत्र नीरवता थी। रह रहकर किसी पेड़ पर से कोई गण्डभैरण्ड पक्षी चिल्लाता। काले पेड़, उनकी काली छाया में चमचमाते जुगनुओं

के सिवाय कोई ऐसी चीज़ न थी, जिससे मालूम हो कि मृगराज कहीं वहाँ आसपास है।

"मृगराज, मेरा ख्याल है, यहीं कहीं हमारी ताक में बैठा होगा। इन पत्थरों के पास रहना खतरे से खाली नहीं है। वह जो ठूँठ दिखाई दे रहा है, उसकी ओर चलो।" कहते हुए जयमल्ल ने आगे दो कदम रखे।

उसी क्षण वे तीनों आश्चर्य के कारण स्तब्ध खड़े रह गये। देखते देखते वह पेड़, फल और पुष्पों से यकायक लद गया।

"केशव, हम जीत गये हैं, इस भयंकर घाटी की धनराशि हमारी है, कालभैरव ने जो बातें तुममे प्रविष्ट होकर कही थीं, उनमें से एक सच निकल गई है। अब हमें यह मृगराज चाहिए।"

जयमल्ल अभी यह कह ही रहा था कि क्षण में यूँ बदलनेवाले पेड़ के पीछे से शेर का गर्जन सुनाई दिया। तीनों सावधान हो गये। केशव और गोमांग ने अपने अपने धनुषों पर बाण चढ़ा लिये। जयमल्ल ने हाथ में तलवार निकाल ली। तुरंत केशव ने बाण उठाकर उस तरफ निशाना लगाया। तभी शेर पेड़ के पीछे से एक बार और गरजा और पंजा उठाकर केशव की ओर लपका। केशव ने जहर के बुझे बाण को शेर के दोनों आँखों के बीच में निशाना साध कर छोड़ दिया।

तीर ठीक-निशाने पर लगा और केशव तक पहुँचने से पहले ही कराहता हुआ फिर शेर एक बार गरजा और चटाई के ढेर की तरह गिर गया। केशव, जयमल्ल और जंगली गोमान्ग भागे भागे गये

और उसको पीठ और पैर पकड़ कर उठाया। जयमल्ल ने दबी आवाज़ में कहा, "चुपचाप, जल्दी से जल्दी किसी गुफा में चलो। यदि जगभोजी को अभी मालूम हो गया कि हमने मृगराज को मार दिया है, तो खतरा है। जब केशव इसका चमड़ा निकालकर, पहन लेगा तब हमें कोई खतरा नहीं है।"

वे तीनों मृत मृगराज को लेकर पास की गुफ़ा में जब पहुँचे, तो जगभोजी की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। "शिष्य! इस मृगराज के कारण मेरी निद्रा भंग हो रही है। न मालूम वह राजकन्या कितना कष्ट उठा रही है। क्यों यह गरज रहा है? किस पर?"

"सब सवेरे मालूम हो जायेगा। जो आवाज़ उसने अन्त में की थी, वह तो मामूली गर्जन-सी न

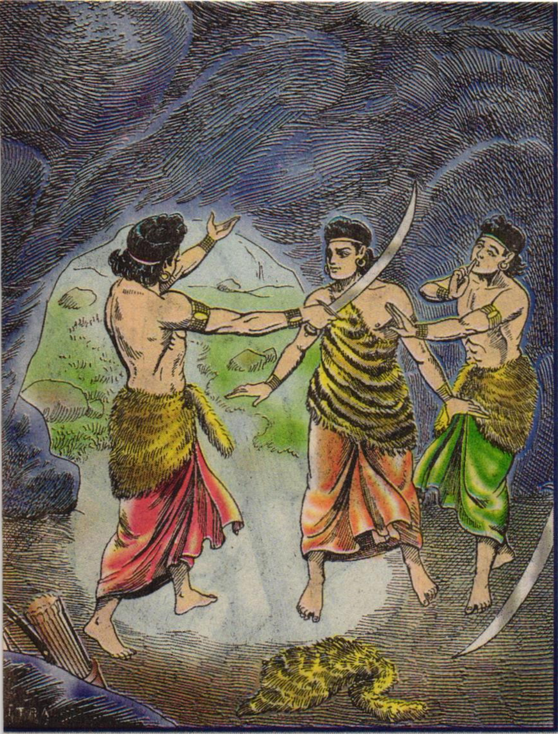

कार्य करना है। यह मालूम करना है कि कालभैरव का बताया हुआ पीपल का पेड़ और उसके नीचे की साँप की बाम्बी इस घाटी में कहाँ है?''

''हम इस निशान से पीपल के पेड़ को जान सकते हैं। वहाँ की धनराशि को भी क्या तुरंत ही उखाड़ ले जायें?'' जंगली गोमान्ग ने कहा।

जयमल्लु उसके प्रश्नों का जवाब न देकर कान खड़े करके सुनने लगा। दूर कहीं मनुष्यों के चलने की ध्वनि उसको सुनाई पड़ी।

''धन की बात बाद में। पहले हम लोगों को राजकुमारी को जगभोजी के चंगुल से छुड़वाना होगा। हम उनके राज्य के नागरिक हैं।'' केशव ने जोश में कहा।

थी। ऐसा लगता था, जैसे गले में कहीं प्राण फड़ फड़ा रहे हों। गर्जन में एक प्रकार की कराह थी। फिर भी, अब आप आराम से सोइये। कल देख लेंगे।'' किंकर ने कहा।

गुफा में थोड़ी देर में ही केशव, जयमल्लु और गोमान्ग ने मिलकर शेर का चमड़ा निकाल लिया। जयमल्लु ने उस चमड़े को केशव को कमर से ऊपर पहिनाया। जंगली गोमान्ग, केशव के इस नये वेश को देखकर उत्साह से चिल्लाया, ''केशव, अब तुम्हारे रूप को देखकर भय हो रहा है और भक्ति भी उपज रही है। यदि कोशिश करो तो तुम हमारी जंगली जाति के सरदार हो सकते हो।''

''वह, प्रयत्न करने का अभी मौका नहीं है...'' कहते हुए जयमल्लु ने एक बार गुफ़ा से बाहर झाँककर देखा। ''अब हमें बस यहाँ एक ही एक

जयमल्लु ने केशव के पास आकर उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, ''केशव, ज़रा धीमे बात करो। मुझे सन्देह है कि इस घाटी में जगभोजी और उसके शिष्य के अलावा और भी कोई है। ज़रा ध्यान से सुनो, कहीं कोई आहट...''

जयमल्लु अभी कह ही रहा था कि दूरी से उसको किसी का पुकारना सुनाई दिया, ''भाई जगभोजी, तुम कहाँ हो? मैं यहाँ वापस आ गया हूँ। इस भयंकर घाटी में तुम्हारी आवाज़ और मृगराज का गर्जन सुनकर अपने कान ठीक करने आया हूँ। तुम दोनों की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई देती?''

तुरंत जगभोजी का उत्तर सुनाई दिया। ''भाई कौन हो? ब्रह्मदण्डी हो क्या? अरे, कितने साल बाद वापिस आये हो?'' केशव, जयमल्लु और

जंगली गोमान्ग ने चौंक कर एक दूसरे का मुँह देखा। उनको ब्रह्मदण्डी की आवाज़ सुनकर भय और आश्चर्य दोनों हुआ। ''ब्रह्मदण्डी यहाँ कैसे आ धमका?'' चकित होकर जयमल्लु बोला, ''जब हमलोग कितने खतरों से खेलते हुए सफलता के द्वार पर इतने निकट आकर अपने भाग्य को दस्तक दे रहे थे तभी ठीक समय पर यह दुष्ट भी घाटी में आ मरा है। अब क्या किया जाये?''

ब्रह्मदण्डी, जगभोजी की गुफ़ा में पहुँच गया है, यह उनकी बातों से, जो उनको सुनाई पड़ रही थी, जाना जा सकता था।

एक दो मिनट बाद ब्रह्मदण्डी की आवाज़ कुछ ऊँची हुई। ''भाई, तुमने ब्रह्मपुर की राजकुमारी कल्पकवल्ली को यहाँ उड़ाकर लाकर अच्छी आफ़त मोल ले ली है। इसके कारण तुम खतरों में पड़ सकते हो और राजकुमारी तथा खजाना के साथ तुम्हारे प्राण भी जा सकते हैं, क्योंकि राजा ने ब्रह्मपुर और कपिलपुर राज्य में रहनेवाली आदिम जातियों को जमा करके इस घाटी को चारों ओर से घेर लिया है। इस घाटी से बाहर जाने के जितने भी मार्ग हैं, सब पर राजा की सेना और उसके आदमी तैनात हैं। मैं तुम्हारी मदद के लिए गरुड़ के मुखवाले एक आदमी के साथ बड़ी कठिनाई से एक गुप्त सुरंग में से चलकर यहाँ पहुँचा हूँ।''

''तुमने मेरे कुशल क्षेम के लिए जो प्रयत्न किये हैं, उन्हें देखकर मैं बड़ा सन्तुष्ट हूँ। हम दोनों ने इस घाटी में एक ही गुरु के पास पचीस छब्बीस साल मन्त्र विद्या का अभ्यास किया है। खैर, हम

अपने खतरों के बारे में भी सोच लेंगे और अब तो तुम भी आ गये हो, इसलिए बचने का कोई मार्ग निकल आयेगा। पर यह तो बताओ कि जिस काम पर तुम गये थे उसका क्या हुआ?'' जगभोजी ने पूछा।

जगभोजी के प्रश्न पर ब्रह्मदण्डी दुखी होकर बोला, ''जिसे हम गुरु कहते आये हैं, न मालूम वह नीच कहाँ है। उसने मन देकर हमें मन्त्र-विद्या नहीं सिखाई। ब्रह्मपुर राज्य में एक पहाड़ी पर काल भैरव की प्रतिष्ठा की। हमें जिस आदमी की ज़रूरत थी, कालभैरव की कृपा से वह हमें मिल भी गया। किसी प्रकार से उसको हमने पकड़ा। उससे यहाँ मिलनेवाली धनराशि के बारे में कहलवाने की कोशिश की। परन्तु मेरा काम खत्म होने से पहिले ही ब्रह्मपुर के राजगुरु ने अपनी

मन्त्रशक्ति से हम सब लोगों के मुख बन्द कर दिये।''

फिर जगभोजी और ब्रह्मदण्डी मिलकर घाटी में कुछ दूर गये। वहाँ पेड़ों के नीचे बैठे गरुड़ के मुँहवाले, स्थूलकाय और जित और शक्तिवर्मा से मिले। तभी पूर्व दिशा में कुछ कुछ उजाला होने लगा था।

''अब चलो, हम घाटी में निकलें। मुझे मालूम है, वह पीपल का पेड़ और बाम्बी कहाँ है, जिसके नीचे धनराशि है।'' कहते हुए जगभोजी ने रास्ता दिखाया।

जगभोजी का ब्रह्मदण्डी से मिलकर गुफ़ा छोड़कर जाना, शिष्य का राजकुमारी के पहरे पर रहना, यह सब केशव और उसके साथियों ने देखा। उनको अन्धकार में एक गुफ़ा के सामने शिष्य का इधर उधर घूमना भी साफ-साफ दिखाई दिया।

वे तीनों उस जगह गये, जहाँ शिष्य पहरा दे रहा था। उन तीनों ने देखा कि वह शिष्य गुफ़ा के सामने रुका और गुफ़ा में बैठी कल्पकवल्ली को सम्बोधित करके बोला, ''हाँ, राजकुमारी! जब मैंने तुमको ब्रह्मपुर राज्य में एक सरोवर के पास देखा था, तभी मैं तुम्हें चाहने लगा था। तुम हमारे गुरु जगभोजी से प्रेम करके कैसे विवाह करोगी, यह मुझे नहीं मालूम हो रहा है। उसके दाँत सूअर के दाँत जैसे हैं। उसकी भौंहें भी कैसी टेढ़ी हैं, कितना बदसूरत है वह! कोई भी कन्या उससे कैसे विवाह कर सकती है? मुझे देखो। मेरे सिर पर जो पंख हैं, वे राजभैरण्ड के हैं। उनको पाने के लिए जो मैंने साहस किया है...''

शिष्य ने बात बीच में ही बन्द कर दी। उसे ऐसा लगा, जैसे उसका दम घुट रहा हो, क्योंकि केशव ने बेल का फन्दा उसके गले में डालकर खींच लिया था।

''केशव, वह दम घुटने से कहीं मर न जाये। उससे हमें कुछ काम है। हमारे काम के लिए उसका जिन्दा रहना जरूरी है। वह हमारी बहुत कुछ मदद कर सकता है। यह फ़न्दा ज़रा ढीला करो।'' कहता जयमल्ल पत्थरों के पीछे से कूदा। केशव ने शिष्य के पास आकर उसके गले में पड़े फ़न्दे को ढीला कर दिया।

(अगले अंक में समाप्त)

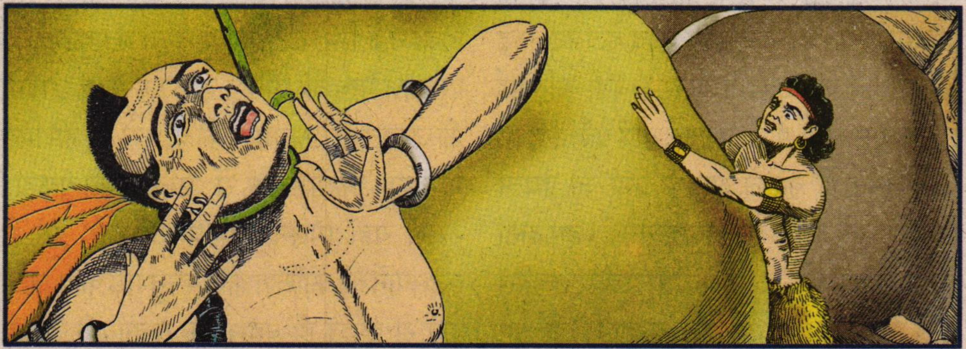

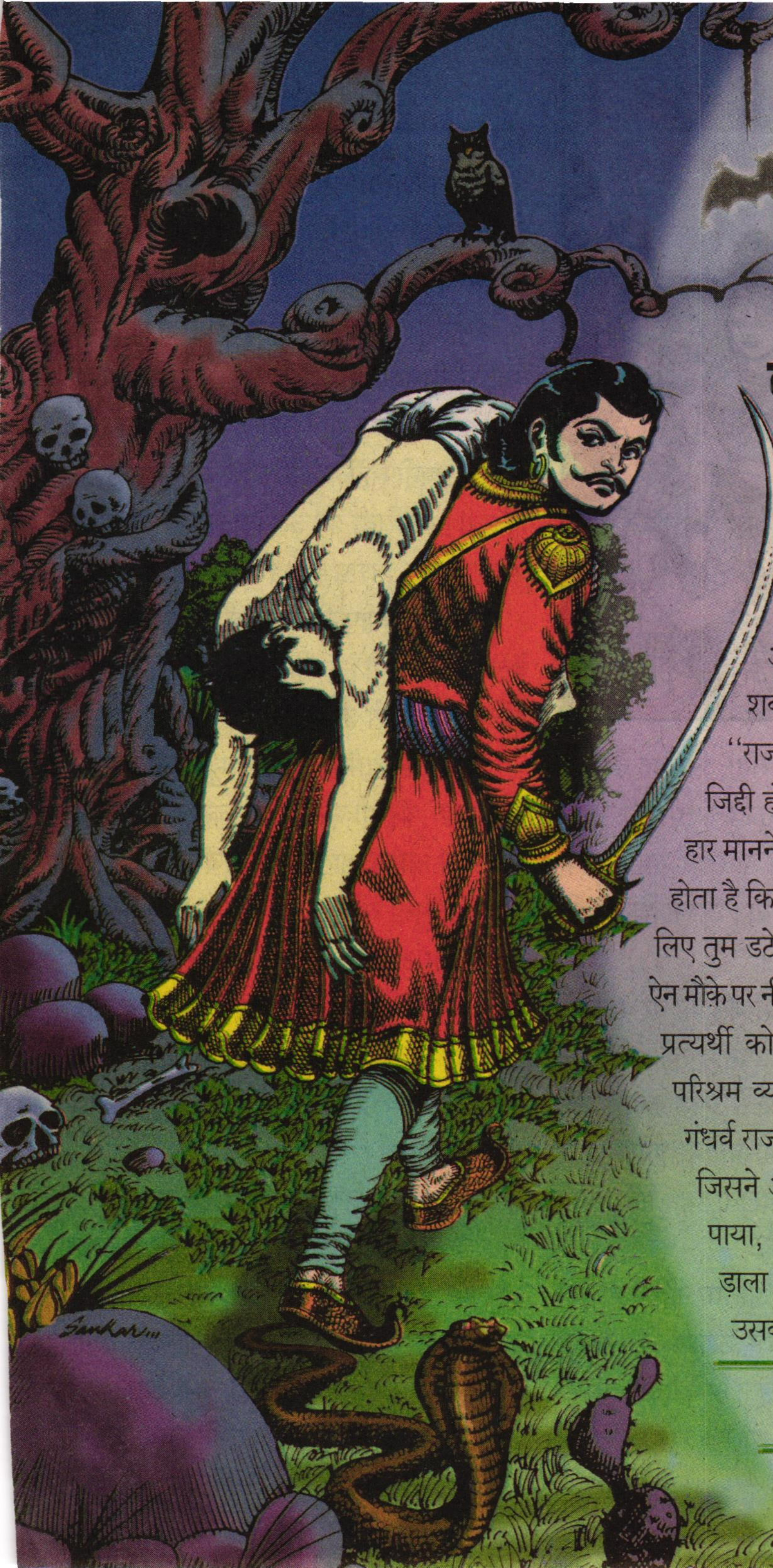

पृथ्वी लोक की नीलांजना

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौट आया; पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, लगता है कि तुम बहुत बड़े जिद्दी हो। किसी भी हालत में अपनी हार मानने को तैयार नहीं हो। मुझे संदेह होता है कि उस जिद्द को कार्यरूप देने के लिए तुम डटे हुए हो। किन्तु हो सकता है, ऐन मौक़े पर नीलांजना की तरह अपनी विजय प्रत्यर्थी को सौंप दोगे और अपना पूरा परिश्रम व्यर्थ कर डालोगे। मैं तुम्हें उस गंधर्व राजकुमारी की कहानी सुनाऊँगा, जिसने अनायास ही मानव जीवन तो पाया, पर उसे ठुकरा दिया और खो डाला। अपनी थकावट दूर करते हुए, उसकी कहानी सुनना,'' फिर वेताल

वेताल कथा

उसकी कहानी यों सुनाने लगाः प्रियंवद वैशाली राज्य का शासक था। उस राज्य की दक्षिणी सरहद के त्रिशृँग नामक प्रांत में कलाधर नामक एक असाधारण शिल्पी रहता था। उसके शिल्पों की प्रशंसा हर कोई करता था।

एक दिन चांदनी रात में जब वह घर के बाहर सोया हुआ था, तब उसने सपने में एक अति सुंदर कन्या को देखा। उस कन्या ने उससे कहा, ''मेरी तीव्र इच्छा है कि तुम मेरी प्रतिमा बनाओ। मैं अपने को उस प्रतिमा में देखना चाहती हूँ। क्या मेरी यह इच्छा पूरी करोगे?''

''तुम जैसी सुंदरी की प्रतिमा नहीं नक्काशूँगा तो मेरी शिल्प कला निरर्थक है, उसका कोई मतलब ही नहीं। पर मैं जानना चाहूँगा कि आख़िर तुम हो कौन?'' वह पूछ ही रहा था कि, वह आँखों से ओझल हो गयी। कलाधर का सपना टूट गया। किन्तु उसका रूप उसके मन में बैठ गया। दूसरे ही दिन पास ही के प्रपात के समीप बैठकर वह उस सुंदरी के शिल्प को नक्काशने लगा।

कलाधर को सपने में जो सुंदर कन्या दिखायी पड़ी उसका नाम था, नीलांजना। वह गंधर्व राजा की इकलौती पुत्री थी। अगली पूर्णिमा की रात को वह अपनी सहेलियों के साथ वन विहार करने निकली। सहेलियों को उसने बताया कि मैं तुम्हें पृथ्वी पर एक विशेष दृश्य दिखाऊँगी।

प्रपात के समीप नीलांजना की प्रतिमा देखकर वे चकित रह गयीं। उन्होंने उससे पूछा, '' तुम्हारी प्रतिमा यहाँ कैसे आ गयी?''

''कलाधर नामक शिल्पी ने मुझे केवल सपने में ही देखा, वह भी एक ही बार, बस, मेरी प्रतिमा को उसने नक्काश डाला,'' नीलांजना ने कहा।

''अद्भुत! यदि इस प्रतिमा में प्राण फूँक दें तो कितना अच्छा हो!'' एक सहेली बोली।

''केवल प्राण ही नहीं, इसमें तुम्हारी कुशाग्र बुद्धि भी जोड़ दी जाए तो और अच्छा होगा। विनोद भरी एक क्रीडा भी खेल सकेंगी।'' दूसरी सहेली ने कहा।

''कौन-सी क्रीड़ा?'' नीलांजना ने पूछा।

''जब देखो, कहती रहती हो कि मैं बड़ी अक़्लमंद हूँ। तुम्हें भूलोक में रहकर उसे साबित करना होगा। तुम इस शिल्प में प्राण डाल दोगी तो मानव कन्या हो जाओगी। तुम्हें अपने मन को, अपनी अक़्लमंदी को उसके साथ बांटना

होगा। इसका यह मतलब हुआ कि तुम भूलोक में और गंधर्व लोक में भी रहोगी। एक नहीं, दो नीलांजनाएँ होंगी। भूलोक में रहने के कारण तुम अद्भुत शक्तियाँ खो बैठोगी। इससे कष्टों से भरे मानव समाज में तुम्हें अपना जीवन संभालना होगा। क्या यह तुम्हें स्वीकार है?'' तीसरी सहेली ने पूछा।

''हाँ, मुझे स्वीकार है,'' नीलांजना ने कहा।

''एक और मुख्य विषय। भूलोक में जो नीलांजना रहेगी, उसे केवल यही ज्ञात है कि वह एक गंधर्व कन्या है। उसके सिवा उसे और कुछ भी याद नहीं होगा। मानती हो?'' चौथी सहेली ने पूछा।

नीलांजना ने सब शर्तें मान लीं। फिर उसने प्रतिमा में प्राण फूँक दिया और सहेलियाँ सहित गंधर्व लोक चली गयी।

प्राण फूँकने के बाद भूलोक की नीलांजना ऐसी जगी, मानों वह अभी-अभी नींद से जागी हो। अपने आप को देखकर वह चकित रह गयी। गंधर्व लोक जाने के उसने प्रयत्न किये, पर वह विफल हो गयी। इससे उसे यह जानने में देर नहीं लगी कि उसने सारी शक्तियाँ खो दीं। वहाँ से वह पैदल चलती गयी और सुबह तक एक जंगल में पहुँची। वहाँ की झाड़ियों में से एक बाघ उसपर आक्रमण करने वाला ही था कि इतने में एक बाण तेज़ी से आया और उस बाघ को जख्मी कर डाला। वह बाघ गुर्राता हुआ वहाँ से भाग गया।

थोड़ी ही देर बाद घोड़े पर सवार होकर एक हट्टा-कट्टा और सुंदर युवक वहाँ आया और घोड़े पर से उतरा। उसी ने नीलांजना को बाघ से बचाया था। उसका नाम था, विभाकर। नीलांजना के अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध होते हुए विभारक ने पूछा, ''तुम कौन हो? खतरों से भरे इस प्रदेश में क्यों आयी हो?''

''अब इस लोक में मेरा अपना कोई नहीं है। गौरवप्रद जीविका की खोज में हूँ।'' नीलांजना ने कहा। पर उसने यह व्यक्त होने नहीं दिया कि वह उसे चाहने लगी है।

''तुम खड्ग युद्ध कर सकोगी तो तुम्हें नौकरी आसानी से मिल जायेगी। अवंती देश का राजा हमारे देश पर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठा है। वह हमारे देश को भी अपने देश का अंग बनाना चाहता है। उसकी सेना हमारे देश की सेना से

अधिक बलवान है। उसका सामना करने के लिए हमारे देश के राजा ने ऐलान किया है कि हर एक घर से एक पुरुष हमारी सेना में भर्ती हो जाए। तुम पुरुष के वेष में आ जाना और अपनी शक्ति के द्वारा यह साबित कर देना कि स्त्रियाँ अबलाएँ नहीं हैं। फिर बाद में सच बताना।''

''तुम्हारी बातें मुझे सही लग रही हैं।'' फिर नीलांजना ने पुरुष वेष धारण किया और उसके साथ जाकर सेना में भर्ती हो गयी।

दूसरे दिन राजा मंत्रियों को बुलाकर इस गंभीर चर्चा में लगे हुए थे कि कैसे बलवान शत्रु का सामना किया जाए। जब वे इस चर्चा में लगे हुए थे, तब पुरुष वेषधारी नीलांजना वहाँ आयी और बोली, ''महाराज, मैंने एक व्यूह रचा है। अगर वह आपको सही लगे तो उसे आचरण में लाइये। अगर वह सफल नहीं हुआ तो मेरे सिर को काट डालिये।''

राजा ने पूछा, ''कहो, तुम्हारा वह व्यूह क्या है?'' ''जब शत्रु हमसे अधिक बलवान हो तो उसके साथ सीधे युद्ध नहीं करना चाहिये। युक्तिपूर्वक उसे तंग करना चाहिये। शत्रुसेना में खलबली पैदा करनी चाहिये और उसके धैर्य पर चोट पहुँचानी चाहिये। फिर उससे युद्ध करना चाहिये।'' फिर नीलांजना ने अपनी व्यूह रचना का सविस्तार विवरण दिया।

राजा को उसका व्यूह सही लगा। वे उसे तुरंत अमल में ले आये। पहले, वैशाली सेना के धनुर्धारी गुप्त रूप से पूर्वी पर्वतों के पास पहुँचे। वहाँ से वे शत्रुओं पर अकस्मात् बाणों के द्वारा सांपों और बिच्छुओं की वर्षा बरसाने लगे। फिर शत्रुओं की सेना के बीचों बीच बाणों द्वारा अग्नि बरसायी। इससे शत्रुसेना में खलबली मच गयी। इसके बाद वैशाली की सेना ने शत्रुओं पर शिकारी कुत्तों को छोड़ा। जब शत्रु सेना अशांत हो गयी तब वैशाली की सेना ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। अवंती का राजा हार गया और क़ैद कर लिया गया। वैशाली की जनता ने अपनी विजय पर हर्ष ध्वनि की।

राजा ने पुरुष वेषधारी नीलांजना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। तब नीलांजना ने पुरुष वेष हटाते हुए कहा, ''महाराज, मैंने यह रहस्य आपसे छिपाया कि मैं एक स्त्री हूँ। इसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ। इस लोक में मेरा अपना कोई नहीं है।''

जब महारानी को मालूम हुआ कि वह एक वीरांगना है, तब बहुत ही खुश होते हुए उसने

कहा, ''महाराज, हमारा कोई वारिस नहीं है। इसे गोद लेंगे।'' राजा भी रानी के मत से सहमत हुए। यही नहीं, उसे अपना वारिस बनाकर उसे गद्दी पर भी बिठाया। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि नीलांजना और विभाकर एक दूसरे को चाहते हैं तो उन्होंने उनका विवाह भी कर दिया।

इस प्रकार नीलांजना ने साबित कर दिया कि वह कुशाग्र बुद्धि की है। सहेलियों को उसने जो चुनौती दी, उसे सफल करके दिखाया। चूंकि भूलोक की नीलांजना व गंधर्व लोक की नीलांजना का मन एक ही था, इसलिए कोमल संदर्भों में भूलोक की नीलांजना के हृदय में जो भावोद्रेक जगते थे, वे ही भावोद्रेक गंधर्व लोक की नीलांजना में भी जगते थे। विभाकर के प्रति उसके मन में जो प्रेम उत्पन्न हुआ, उसका अंत करने के लिए गंधर्व लोक की नीलांजना एक दिन रात को उसके अंतःपुर में आयी। तब भूलोक की नीलांजना ने पूछा, ''तुम एकदम मेरा प्रतिबिंब लगती हो। कौन हो तुम?''

''मैं नहीं, तुम मेरे प्रतिबिंब हो। तुम मेरे रूप के एक शिल्प हो। मैंने ही तुममें प्राण फूँका था। तुममें जो मन है, वह भी मेरा ही है। सहेलियों के साथ मैंने ही तुम्हें भेजा था। अब तेरी भूमिका समाप्त होनेवाली है। इसीलिए आयी हूँ।'' गंधर्व लोक की नीलांजना ने कहा। ''क्या जीवन में तुम कभी हारी हो?'' भूलोक की नीलांजना ने पूछा।

''नहीं'', गंधर्व लोक की नीलांजना ने कहा।

''जब तुम्हारा मन मेरे मन में हो, तब उतना ही मनोबल तुममें भी होगा न, जितना मुझमें है?

इसलिए तुम्हारे हाथों मैं कैसे हारूँगी। मेरी भूमिका का अंत करना तुम्हारे लिए असंभव है।'' गंभीर स्वर में भूलोक की नीलांजना ने कहा।

''तुममें जो भाव उत्पन्न होते हैं, वे मेरे मन में भी उत्पन्न होते हैं। यह मेरे लिए बहुत ही कठिन लग रहा है। हम दोनों में से किसी एक का जीवन समाप्त हो जाना चाहिये। मानव कन्या होने के नाते तुम कष्ट झेल रही हो, इसलिए तुम्हारी समाप्ति ही न्यायसंगत है।'' गंधर्व लोक की नीलांजना ने कहा।

''मैं कष्टों का अनुभव नहीं कर रही हूँ। तुम्हारे लिए मानवों का कोई मूल्य नहीं है क्योंकि वे तुम्हारी दृष्टि में नगण्य हैं। स्वशक्ति के आधार पर मानवों ने बहुत कुछ साधा है। उन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया। यहाँ का प्रेम, अनुराग, संतृप्ति

विशिष्ट हैं। शांत होकर सोचो, फिर निर्णय लेना'', तब भूलोक की नीलांजना ने कहा।

गंधर्व लोक की नीलांजना सोच में पड़ गयी। उसके हृदय से एक अग्नि निकली, उसी में उसने अपना अंत कर डाला और देखते-देखते भस्म हो गयी।

वेताल ने कहानी बताने के बाद पूछा, ''राजन्, जिस प्रतिमा में उसने प्राण फूँका, चाहती तो वह उसे समाप्त कर सकती थी, पर नीलांजना ने ऐसा नहीं किया। आत्म आहुति दे दी! उसने ऐसा क्यों किया? भूलोक की नीलांजना के साथ उसने अपना मन बांटा, इसलिए शायद वह विवेक खो बैठी। क्या यह अविवेक ही इस आत्म आहुति का कारण है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''गंधर्व लोक की नीलांजना ने अपने शिल्प में प्राण फूँका, उसके तदनंतर भूलोक की नीलांजना ने जो-जो सफलताएँ पाईं उनसे उसे मालूम हुआ कि भूलोकवासी कितना सामर्थ्य रखते हैं। उन्हें जानने का उसे एक अच्छा मौक़ा मिला।

भूलोक की नीलांजना की बातों के द्वारा उसे मालूम हो गया कि मानव कितने महोन्नत हैं। इस स्थिति में भला उसके लिए यह कैसे न्यायसंगत होगा कि वह उस भूलोक की नीलांजना के जीवन को छीन ले, जिसने स्वयं अपने जीवन को संजोया-संवारा। तिस पर दोनों का मन एक ही तो है।

''यद्यपि दोनों के मनों में विभाकर ही है, पर उसने तो भूलोक की नीलांजना से ही प्रेम किया, गंधर्व लोक की नीलांजना से नहीं। अगर गंधर्व-लोक की नीलांजना, विभाकर से अपने प्रेम के बारे में बताये तो हो सकता है, वह साफ़-साफ़ इनकार कर दे। उस स्थिति में उसके आत्माभिमान को ठेस पहुँचेगी और उसका जीना दुभर हो जायेगा। यह सब सोचने के बाद ही उसने अपने को मिटा लिया। यह सब हुआ, सहेलियों के क्रीड़ा-विनोद का फल।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः सूर्यप्रकाश की रचना)

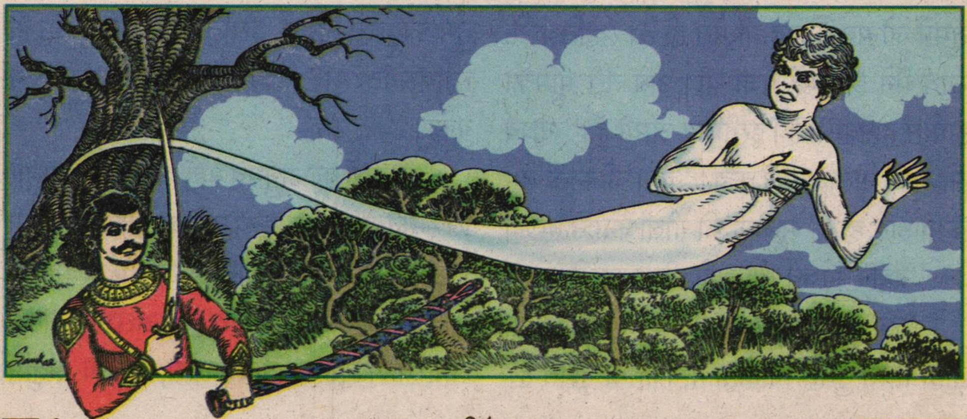

SHEMAROO
SHEMAROO ENTERTAINMENT PRESENTS
GHATOTHKACH
MASTER OF MAGIC
sun
A FILM BY SINGEETAM SRINIVASA RAO
Hey Pals, be a part of the Great Ghatothkach Contest!
Answer the quiz below and win fabulous prizes from Ghatothkach!*
Who is Ghatothkach 's father?
a) Arjun; b) Bheem; C) Nakul
* Conditions apply
The prizes are sponsored by SHEMAROO
The first 50 winners will win exciting Ghatothkach movie merchandise.
Mail your entry to reach us before June 30, 2008
Send your answers pronto to:
Great Ghatothkach Contest, CHANDAMAMA INDIA LTD. JVL Plaza Block-A, 6th Floor, 626 Anna Salai, Teynampet, Chennai-18
Not patient enough to post your answers? Email them at Great_Ghatoth@chandamama.com

घटोत्कच

भीमसेन, हिडिंबा का पुत्र था, घटोत्कच। वह पिता की ही तरह पराक्रमी था और माता की तरह राक्षसी मायाओं को प्रदर्शित कर सकनेवाला वीर था। यद्यपि वह एक राक्षसी का पुत्र था, पर वह सदाचारी व सद्व्यवहारी था। आजीवन वह पांडवों का सेवक बना रहा और यथासाध्य उनकी सहायता की। उसका जन्म वृत्तांत भी बड़ा ही रोचक है।

पांडव वारणावत के लाख के घर से बच निकले और आधी रात को सुरंग मार्ग से जंगल में पहुँचे। घोर अंधकार में बहुत दूर तक पैदल चलते हुए गंगा नदी पार की और दक्षिणी दिशा की ओर गये। बहुत देर तक पैदल चलते रहने के कारण वे थक गये और एक बरगद के पेड़ के नीचे सो गये। भीम उनकी रखवाली करने के लिए जागता रहा।

उस समय हिडिंब नामक एक राक्षस था। वह भूखा था। आहार के लिए अरण्य भर में घूमता रहा और आखिर जंभाई लेते हुए एक जगह पर रुक गया। वहाँ से उसने पेड़ की छाया में सोये हुए पांडवों को देखा। उसने अपनी बहन हिडिंबा को बुलाकर कहा। ''बरगद के पेड़ के तले सोये हुए मानवों को मार डालो। उन्हें खाने से पेट भर जायेगा।''

हिडिंबा उस पेड के पास आयी, जहाँ पांडव सोये हुए थे। उसने सोयी हुई कुंती, धर्मराज, अर्जुन, नकुल, सहदेव को देखा। और उस भीम को भी देखा, जो उनकी रखवाली करते हुए इधर-उधर घूम रहा था। हिडिंबा को भीम कामदेव जैसा सुंदर लगा। उसने फौरन सुंदर रूप धारण किया और लज्जा से भरी मुस्कान लिये वहाँ पहुँचकर भीम से कहा, ''आप लोग यहाँ क्यों आये? आप सबको मारकर ले आने की आज्ञा दी, मेरे बलशाली भाई हिडिंब राक्षस ने। तुम्हें देखते ही मुझमें आशा

जगी। तुमसे विवाह रचाने की मेरी प्रबल इच्छा है। मेरी इच्छा पूरी करोगे तो मैं तुम सबको मेरे भाई से बचाऊँगी और कामगमन से ले जाकर सुरक्षित प्रदेश में पहुँचाऊँगी।''

हिडिंबा के आने में विलंब हुआ तो हिडिंब उस जगह पर गया और अपनी बहन को सुंदर कन्या के रूप में देखकर क्रोधित होते हुए कहा, ''तुम्हें इन्हें मारकर ले जाने की आज्ञा दी, लेकिन तुम सुंदर नारी बनकर इनसे संबंध जोड़ने की कोशिश में लगी हुई हो। पहले इन्हें मार डालूँगा और बाद इस अपराध में तुम्हें भी मार डालूँगा।'' फिर वह भीम से जूझ पड़ा।

भीम उसे दूर ले गया और फिर दोनों में घोर लड़ाई हुई। इनकी लड़ाई से भूमि कांप उठी, पेड़-पौधे धराशायी हो गये। हिडिंब ज़ोर से चिल्ला उठा। अरुणोदय होते-होते भीम ने हिडिंब की कमर को तोड़ डाला और वह ज़ोर से चिल्लाता हुआ मर गया।

इस बीच, हिडिंबा ने अपने बारे में और अपने भाई के बारे में कुंती, धर्मराज को पूरा विवरण दिया। साथ ही भीम के प्रति अपने मन की बात भी उनसे साफ-साफ बतायी। उससे विवाह करने में भीम पहले सकुचा रहा था, पर माँ व अग्रज के कहने के कारण उससे विवाह कर लिया। पर एक शर्त पर। जब तक उनका बेटा नहीं होगा, तब तक ही वह उसकी पत्नी बनकर रहेगी।

हिडिंबा, भीम को लेकर आकाश मार्ग में उड़ चली। दोनों पर्वत शिखरों पर, पर्वत गुफ़ाओं में,

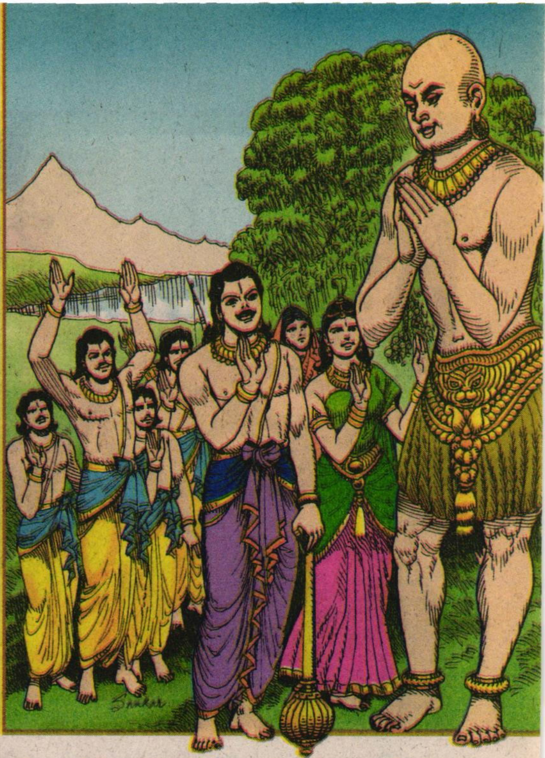

नदी तटों पर, सरोवरों के पास, सुंदर झाड़ियों में बिहार करते रहे। कालक्रम में हिडिंबा गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। वह पैदा होते ही बड़ा हो गया और माता-पिता को सविनय प्रणाम किया। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था, इसीलिए उन्होंने उसका नाम रखा घटोत्कच, जिसका अर्थ है केशहीन गागर जैसे सिरवाला।

घटोत्कच ने बडों को प्रणाम करके कहा, ''अगर आपको मुझसे कोई काम हो तो मन में मेरा स्मरण कीजिये। तुरंत आपके सम्मुख खड़ा हो जाऊँगा।'' यों कहकर वह उत्तरी दिशा में चला गया। महावीर बनकर वह राक्षसों का नायक बना और मेघवर्ण, अंजन पर्व नामक दो पुत्रों को जन्म दिया।

महाभारत युद्ध में उसने कौरव सेना को तरह-

तरह की तकलीफें पहुँचायीं और उनके छक्के छुड़ाये। भगदत्त और घटोत्कच के बीच जो युद्ध हुआ, वह बड़ा ही विचित्र था। भगदत्त ऊँचे हाथी पर बैठकर पांडव सेना को तितर-बितर करने लगा। अपने को बचा न सकने की स्थिति में पांडव सेना भाग गयी। घटोत्कच का स्मरण करते ही वह प्रत्यक्ष हुआ। उसका सामना न कर सकने के कारण कौरव सेना में हाहाकार मच गया। घटोत्कच ने भगदत्त पर बाणों की वर्षा की और फिर अदृश्य हो गया।

अर्जुन का पुत्र ऐरावत ने भयंकर युद्ध किया और बेहोश हो गया। तब अर्षभृँग नामक राक्षस ने उसके शरीर में तलवार भोंककर उसे मार डाला। यह देखकर घटोत्कच क्रोधित हो उठा और भयंकर आकार में प्रत्यक्ष होकर चमकते हुए शूल को हाथ में लिये राक्षसों सहित कौरव सेना पर टूट पड़ा। दुर्योधन ने घटोत्कच के सामने आकर सिंहनाद किया। उसके पीछे-पीछे हाथियों पर सवार सेना भी आयी।

राक्षस उस सेना पर टूट पड़े और उनका ध्वंस करने लगे। घटोत्कच ने दुर्योधन का सामना किया और अपने हाथ में जो शक्ति थी, उसपर फेंकी। इतने में बंग देश का राजा अपने हाथी को दुर्योधन के रथ के बीच ले आया। घटोत्कच की फेंकी शक्ति के कारण वह हाथी ज़मीन पर गिर पड़ा। बंग देश का राजा उसपर से कूद पड़ा और अपने को बचा लिया और वहाँ से भाग गया। घटोत्कच टूट पड़ा और चिल्लाते हुए दुर्योधन को सताने लगा।

भीष्म की सलाह लेकर द्रोण, सोमदत्त, सैंधव जैसे वीर दुर्योधन की सहायता करने आगे आये।

घटोत्कच ने उन्हें भी तरह-तरह से सताया। इतने में धर्मराज की अनुमति लेकर भीम, घटोत्कच की सहायता करने आ पहुँचा। दोनों पक्षों में जो युद्ध हुआ, उसमें पांडवों की जीत हुई।

इसके बाद दुर्योधन ने भीम का सामना किया। भीम को चोट पहुँची तो घटोत्कच, अभिमन्यु आदि वीरों ने दुर्योधन को घेर लिया। इस स्थिति को भांपते हुए द्रोण कौरव वीरों को लेकर दुर्योधन की सहायता करने वहाँ आये। तब जो युद्ध हुआ, उसमें घटोत्कच ने राक्षसी मायाओं को प्रदर्शित किया और शत्रु सेनाओं को चकित कर दिया। उन्हें दिशाहीन कर दिया।

घटोत्कच की शक्तियों का सामना कौरव की सेना नहीं कर सकी और वह छिन्न-भिन्न हो गयी। वह शिविरों की तरफ़ भाग गयी। इसके बाद भीष्म की सलाह के अनुसार भगदत्त सुप्रतीक नामक हाथी पर सवार होकर पांडवों की सेना पर पिल पड़ा। घटोत्कच और उसके बीच में भयंकर युद्ध हुआ।

इसके बाद भीष्म स्वयं युद्ध में उतरे और पांडव सेनाओं का नाश किया। अंत में शिखंडी को बीच में खड़ा करके आये अर्जुन पर बाणों का प्रयोग नहीं कर पाये और हार गये।

इसके बाद कर्ण रण के मैदान में आया और अर्षभृँग व अलायुधासुर का उसने संहार किया। पर घटोत्कच के वारों से वह बच नहीं सका। उसके पास इंद्र की दी हुई अमोघ शक्ति थी।

कर्ण उसका प्रयोग केवल अर्जुन पर ही करना चाहता था क्योंकि केवल उसी शक्ति से वह अर्जुन को मार सकता था। दुर्योधन को कर्ण पर बहुत आशा थी और उसे विश्वस था कि कौरव सेना में कर्ण को छोड़कर कोई और वीर अर्जुन को नहीं मार सकता। फिर कर्ण को अर्जुन के साथ अपना भी हिसाब-किताब चुकाना था। वह अनेक अवसरों पर अर्जुन से अपमानित हो चुका था। किन्तु घटोत्कच कौरवों की सेना पर उस दिन ऐसी कहर ढा रहा था मानों उस दिन एक भी कौरव नहीं बचेगा। इसलिए विवश होकर उसने इस शक्ति का प्रयोग घटोत्कच पर किया। इस वजह से घटोत्कच की मृत्यु हुई।

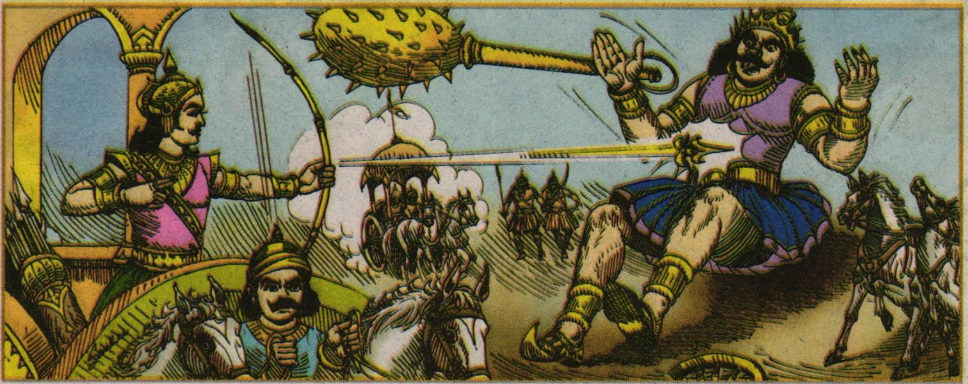

Arya
CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS
Spend this summer with your favourite Companions
Follow the adventures of the unknown **Prince Arya** with his forest friends.
Read the **legend of Garuda**, the invincible warrior.
Solve mysteries in the jungle with super sleuths, **Eli and Puli**, of the Detective Duo intelligence agency.
Garuda
Get your copies NOW!
Eli Puli
Rs. 40
ARYA
Rs. 60
Garuda The Invincible
Rs. 50
Eli & Puli
Chandamama subscribers buying all three titles will get a 20% discount
Available with vendors and leading bookstores.

अपराध योग्य न्याय

बादशाह अकबर एक दिन सवेरे-सवेरे राजभवन के ऊपरी भाग में टहल रहे थे। उद्यानवन की ठंडी हवाओं के साथ पुष्पों की सुगंध उन्हें बहुत आनंदित कर रही थी। उद्यानवन में जाकर पुष्पों को देखने की उनकी इच्छा हुई। सीढ़ियों से उतरते हुए वे उद्यानवन की ओर जाने लगे।

सुगंध युक्त ठंडी हवाएँ जब उनके शरीर को छू रही थीं और पेड़ों पर बैठे पक्षियों के मधुर संगीत उनके कानों में गूँज रहे थे तब उन्हें लगा कि यह भूमि ही स्वर्ग है। तन्मय होकर वे उद्यानवन में विचरने लगे।

तेजी से जाते हुए बादशाह का बायां पैर किसी चीज़ से अचानक टकरा गया। वे गिरने ही वाले थे, पर उन्होंने अपने को संभाल लिया। पैर में दर्द होने लगा तो पास ही की चट्टान पर बैठकर अपने पैर को देखा। बायें पैर का उनका अंगूठा रक्त सिक्त हो गया। पलटकर उन्होंने देखा कि वहाँ एक नुकीला पत्थर पड़ा हुआ है, जिसकी वजह से यह दुर्घटना घटी। पत्थर को देखकर दर्द से उनमें अधिक क्रोध आ रहा था। वे चिल्ला पड़े, ''बागवान कहाँ है? क्या उद्यानवन की देखभाल का यही तरीक़ा है?'' पर, आसपास कोई नहीं था। उस समय बागवान कैंची और कुदाल लाने अपनी झोंपड़ी गया था। वहाँ किसी को न पाकर क्रोध में दाँत पीसते हुए वे राजभवन लौटे।

भवन द्वार पर पहुँचते ही उन्होंने ताली बजायी, पहरेदार दौड़ते हुए आये और बादशाह को सलाम किया। ''तुरंत जाओ, माली को पकड़कर ले आओ, जेल में डाल दो और कल सूर्योदय होते ही उसे फांसी पर चढ़ा दो।'' बादशाह अकबर ने हुक्म दिया।

''जी मालिक'', कहते हुए जब पहरेदारों का अधिकारी पीछे हटने लगा तो बादशाह ने क्रोध-में कहा, ''उस बदमाश की असावधानी की ही वजह से मेरा पाँव घायल हो गया। उस बेवकूफ़ को इतना भी नहीं मालूम कि उद्यानवन की

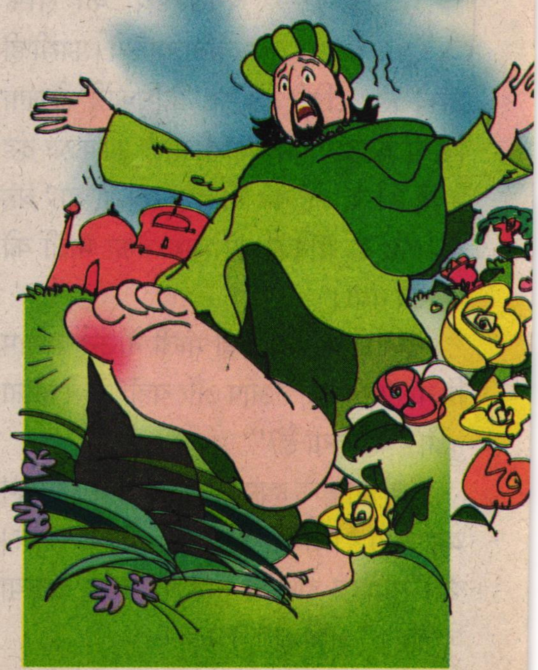

पगडंड़ियों को साफ़ रखना चाहिये। फांसी ही उसके लिए उचित दंड है।'' अधिकारी को लगा कि बादशाह अनावश्यक ही माली को कठोर दंड दे रहे हैं। पर वह कर भी क्या सकता था? वह चुपचाप दो सैनिकों को साथ लेकर माली को पकड़ने गया।

सैनिकों को देखते ही माली ने उन्हें सलाम किया और पूछा, ''आप और यहाँ? कैसे आना हुआ? बात क्या है?''

''बादशाह के हुक्म को अमल में ले आने हम यहाँ आये हैं। अब तुम्हें ले जाकर जेल में डालेंगे। कल सूर्योदय होते ही तुम्हें फांसी पर चढ़ाया जायेगा।'' अधिकारी ने कहा।

''मैंने ऐसा क्या अपराध किया?'' स्तंभित होकर माली ने धीमे स्वर में पूछा।

अधिकारी ने कारण बताया। यह सुनते ही माली का चेहरा फीका पड़ गया। सैनिकों ने माली के हाथों में हथकड़ियाँ लगा दीं।

माली की पत्नी अधिकारी के पैरों पर गिड़गिड़ाने लगी, ''साहब, मेरे पति ने कोई ग़लती नहीं की। दया करके उन्हें छोड़ दीजिये।''

''हम कुछ करने की हालत में नहीं हैं। बादशाह के हुक्म को टालेंगे तो हमें भी फांसी होगी।'' थोड़ी देर तक रुककर अधिकारी ने कहा, ''फांसी पर चढ़ाने के लिए कल सूर्योदय तक समय है। तुम एक काम करना।''

''कहिये, साहब, मुझे क्या करना होगा'', माली की पत्नी ने पूछा।

''तुम्हारे पति को केवल बीरबल ही बचा सकते हैं। उनके पास जाना और अपनी समस्या बताना। वे अवश्य तुम्हारे पति को बचा सकेंगे।'' अधिकारी ने कहा और माली को जेल की ओर ले गया।

माली की पत्नी बीरबल के घर गयी। उनके पैर पकड़े और सविस्तार पूरा किस्सा बताया।

सब कुछ सुनने के बाद बीरबल ने कहा, ''तुम्हारा पति अगर निरपराधी है तो अवश्य बच जायेगा। तुम्हारे साथ न्याय होगा। दुखी मत हो।'' यों उसे सांत्वना देकर भेज दिया।

इसके बाद उसने पहरेदारों के अधिकारी से कहा, ''मुझे जेल में जहाँ माली बंदी है वहाँ ले जाना।''

अधिकारी उसे जेल के पास ले गया। जेल के अधिकारी ने बीरबल को देखते ही नमस्कार किया। सिर झुकाकर बैठे माली को बीरबल ने अपने पास बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। फिर बताया, ''जैसे मैं कहता हूँ, वैसे ही करना।''

यह सुनकर माली कांपने लगा। सोचने लगा कि, 'यह कैसे संभव हो सकता है।'

''तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो मेरे कहे मुताबित करना'', कहते हुए बीरबल वहाँ से निकल पड़ा।

दूसरे दिन दरबार में जब बादशाह बीरबल की किसी हास्योक्ति पर ठठाकर हँस रहे थे, तब पहरेदारों का अधिकारी वहाँ आया और बादशाह को सलाम किया। ''कहो'', बादशाह ने हुक्म दिया। ''मृत्यु दंड के पहले माली आपके दर्शन करना चाहता है।'' अधिकारी ने कहा।

''ठीक है, उसे हाजिर करो'', बादशाह ने कहा। हथकड़ियों के साथ माली दरबार में आया और घुटने टेककर बादशाह को सलाम किया। उसके बाद उठकर उसने थूक दिया।

''इतना घमंड!'' नाराज़ बादशाह ने कहा।

''सरकार, मुझसे बहुत ही छोटी-सी ग़लती हो गयी, इसके लिए आपने मुझे मृत्यु दंड दिया। शायद लोग यह भी कहेंगे कि मेरे साथ बड़ा अन्याय हुआ है। इसलिए मैं बहुत बड़ा अपराध करना चाहता हूँ और उसके योग्य न्याय चाहता हूँ। प्रभु के दरबार में, उन्हीं के समक्ष जो थूकेगा, वह मृत्यु दंड के योग्य ही है न?'' बिना किसी संकोच के माली ने बादशाह से कहा।

बादशाह ने उसकी बातों में छिपे मर्म को भांप लिया और सिर हिलाते हुए पूछा, ''भरे दरबार में थूकने के लिए किसने तुम्हें सलाह दी?''

माली ने बीरबल की ओर देखा। बादशाह पूरी बात समझ गये और कहा, ''बीरबल, जल्दबाजी में मैंने माली को मृत्यु दंड दिया। इस उदाहरण से तुमने मुझे समझा दिया कि मुझसे क्या ग़लती हुई। एक निरपराधी को बचाने पर तुम्हें बधाइयाँ।''

माली ने झुककर बादशाह को सलाम किया और अपनी कृतज्ञता जतायी।

''तुम कृतज्ञ रहो, बीरबल के, क्योंकि उसी के कारण तुम आज बच गये।'' बादशाह अकबर ने हँसते हुए कहा।

श्री राम का जन्म दिन

हिन्दू धर्म के अनुयायी राम का जन्म दिन रामनवमी और श्री कृष्ण जयन्ती जन्माष्टमी प्रति वर्ष मनाते हैं। जन्मदिनों का निर्धारण जन्म के समय की ग्रह स्थिति और महीने के अनुसार किया जाता है। प्लैनेटैरियम नाम के सॉफ्टवेयर ने शोधकर्ताओं को राम के वास्तविक जन्म दिन का पता लगाने में मदद की है। यह तिथि है ५११४ बी.सी. में १० जनवरी। भरत एक दिन बाद पैदा हुआ। राम का राजतिलक ५०८९ बी.सी. में ५ जनवरी को निश्चित किया गया था। वे वनवास के लिए १ दिन पहले चले गये। उस समय वे २५ वर्ष के थे। राम-रावण युद्ध ५०७६ बी.सी. में हुआ और राम उसी वर्ष १४ सितम्बर को अयोध्या लौट आये।

नालन्दा 'एसियन' राष्ट्रों की बैठक में

सिंगापुर में आयोजित एसियन राष्ट्रों की नवम्बर की बैठक ने १६०० वर्ष पुराने नालन्दा विश्वविद्यालय के जीर्णोद्धार तथा आधुनिकीकरण के लिए कोष में योगदान करने का निश्चय किया है। इसकी स्थापना ५ वीं शताब्दी में गुप्त सम्राटों द्वारा की गई थी। पाँचवीं से १२ वीं शताब्दी तक भारत के राजाओं ने इसके विकास और समृद्धि पर अच्छी तरह ध्यान दिया। नालन्दा विश्वविद्यालय आवासीय था और यहाँ दूर देशों से-जैसे टर्की, चीन, जापान, कोरिया तथा फारस से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। एक समय यहाँ छात्रों की संख्या १०,००० और शिक्षकों की संख्या १,५०० से अधिक थी। चीनी यात्री ह्यून सैंग इस विश्वविद्यालय में ३ वर्षों तक रहे।

पंजाब की एक लोक कथा

वह अपने पिता को लवण के समान प्यार करती थी

एक बार एक अभिमानी राजा था। उसके सात बेटियाँ थीं। जब वे विवाह-योग्य बड़ी हो गईं तब राजा ने उनके विवाह के पूर्व यह जानने का निश्चय किया कि वे सब अपने पिता को कितना प्यार करती हैं।

छः बेटियों ने एक के बाद एक तत्काल कहा, ''पिता, हमलोग आप को मधुरतम चीनी के समान प्यार करते हैं,'' ''पिता हम आप को शहद के समान प्यार करते हैं'', ''पिता हम आप को मधुरतम मिठाई के समान प्यार करते हैं।''

उनके उत्तर सुनकर राजा अत्यन्त आनन्दित हुआ। लेकिन अपनी सबसे छोटी बेटी की चुप्पी पर हैरान था। उसने उसे बुलाकर बगल में बिठाया और पूछा, ''बताओ, मेरी छोटी बिटिया कि तुम मुझे कितना प्यार करती हो?''

राजकुमारी ने पिता की ओर देखा और कहा, ''पिता, मैं आपको हृदय की बहुत गहराई से प्यार करती हूँ।'' उसने बहुत मीठी आवाज में जवाब दिया, ''मैं आपको लवण के समान प्यार करती हूँ।''

राजा अपनी सबसे छोटी और सबसे प्यारी बेटी का उत्तर सुनकर अवाक् रह गया। उसने अपनी पीड़ा के उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा, ''तुम मामूली नमक की तरह, जो गरीब से गरीब के पास भी उपलब्ध रहता है, यदि मुझे प्यार करती हो तो हृदय की गहराई से बहुत प्यार कैसे कर सकती हो। सच बता, मेरी बेटी, तुम मुझे कितना प्यार करती हो?''

राजकुमारी ने पुनः कहा, ''मैं आपको सच बताती हूँ मेरे प्रिय पिता, मैं आपको नमक की तरह प्यार करती हूँ।''

राजा उसकी बातों पर क्रोधित हो उठा। उसने

को राजी हो गया। उस दिन लकड़हारा बल्कि देर से लौटा। सूरज डूब चुका था पर तब भी वह जंगल में ही था और राजकुमारी को देने के लिए तब तक उसे कुछ नहीं मिला था। जब वह अन्धेरे में चलता हुआ वापस आ रहा था, तब कोई लम्बी मोटी सी चीज उसके पाँव से टकराई। उसने उसे एक मजबूत रस्सी समझ कर उठा लिया और घर ले जाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

निश्चय किया कि वह बड़ी बेटियों का विवाह राजाओं और राजकुमारों से करेगा। और सबसे छोटी बेटी के लिए एक लकड़हारे को चुना जो जंगल में एक छोटे से झोंपड़े में रहता था। राजकुमारी अपने पिता के इस निर्णय को सुन कर चुपचाप बहुत रोई। लेकिन उसने संकल्प किया कि यह एक दिन अपने पिता को विश्वास दिला देगी कि वह उसे बहुत प्यार करती है। इसलिए उसने चुपचाप महल छोड़ दिया और लकड़हारे की झोंपड़ी में जाकर रहने लगी।

विवाह के बाद पहले दिन जब लकड़हारा लकड़ी काटने के लिए जंगल जाने की तैयारी कर रहा था तब उसने कहा, "मेरे प्रिय पति, तुम यह गाँठ बाँध लो कि आज से तुम हर रोज मेरे लिए जंगल से कोई उपहार जरूर लाओगे। और तुम देखोगे कि हम लोग शीघ्र ही फलेंगे-फूलेंगे।"

लकड़हारा, जो राज घराने की अपनी बीवी से सहमा हुआ था, तुरन्त उसके कथनानुसार करने

राजकुमारी ने उसे दीये की रोशनी में देखकर कहा, "अरे, यह तो मरा हुआ साँप है!"

लकड़हारा घबरा गया। "कैसी भयंकर भूल हो गई! मरे हुए साँप का अब क्या करें?" उसने सहमते हुए कहा।

"छप्पर पर फेंक दो। सुबह देखेंगे कि क्या करना है।" राजकुमारी ने कहा।

अब, ऐसा हुआ कि उस दिन रानी जो अपनी सबसे छोटी और सबसे प्रिय बेटी के प्रति राजा का कठोर व्यवहार देख कर बहुत दुखी थी, महल के बाग में टहल रही थी। घूमते समय किसी चीज से ठोकर लगने के कारण वह लड़खड़ा गई और मूल्यवान हीरे के साथ जड़ा हुआ उसका हार गले से निकल कर जमीन पर गिर गया। रानी इतनी शोक-विह्वल थी कि उसे यह पता नहीं चला कि हार गिर गया है। वह सम्भल कर फिर टहलने लगी। तब तक अन्धेरा होने लगा था। रानी महल में वापस चली गई।

शीघ्र ही, महल के उद्यान के ऊपर से उड़ते हुए एक गरुड़ ने नीचे चमकती हुई कोई चीज देखी। उसने झपट्टा मार कर हार को चोंच से उठा लिया और जंगल की तरफ उड़ गया। लकड़हारे की झोंपड़ी के ऊपर से उड़ते समय उसके छप्पर पर उसने एक मरा हुआ साँप देखा। उसने हार को छप्पर पर छोड़ दिया और मरा हुआ साँप उठा कर उड़ गया।

तब तक रानी को पता चल गया कि उसका हार कहीं खो गया है। राजा ने उसे विश्वास दिलाया कि उसका हार निश्चित रूप से वापस मिल जायेगा। उसने राज्य भर में ढिंढोरा पिटवाया कि जो भी रानी का हार वापस लाकर देगा उसे मुँह माँगा पुरस्कार दिया जायेगा।

दूसरे दिन सुबह जब लकड़हारा अपने छप्पर पर से मरे हुए साँप को हटाने गया तब वह वहाँ चकाचौंध कर देने वाली रोशनी देखकर डर गया। वह दौड़ता- चिल्लाता अन्दर आया, ''राजकुमारी, राजकुमारी! आओ, देखो, छप्पर पर रोशनी चमक रही है। लगता है, आग लग गई है!''

राजकुमारी दौड़ती हुई बाहर आई। उसने छप्पर पर देखा और वह जोर से हँसती हुई बोली, ''प्रिय पति, वह आग नहीं है। यह मेरी माँ का हीरे का अमूल्य हार है। भाग्य से यह हमलागों के पास आ गया है। मेरे पास एक अनूठी योजना है। समय आ गया है जब मेरे पिता मुझे समझेंगे।''

जब राजकुमारी अपने पति से बात कर ही रही थी कि उन्होंने मुनादी की ढोल पीटने की आवाज सुनी। ''सुनो, सुनो !, सब लोग सुनो! रानी का अमूल्य हीरे का हार खो गया है। जिसे भी यह मिले और राजा को वह लौटा दे तो उसे मुँह माँगा इनाम दिया जायेगा। सब लोग सुनो, भाई, सब लोक सुनो!''

राजकुमारी ने अपने पति से कहा, ''अभी तुरन्त हार के साथ महल में जाओ। मेरे पिता, राजा को यह नहीं बताना कि तुम कौन हो और इनाम में धन-दौलत नहीं माँगना। परन्तु जोर देकर अनुरोध करना कि वे हमलोग के साथ भोजन करें।

लकड़हारा तुरन्त महल के लिए रवाना हो गया। महल के द्वारपाल ने उसके हाथ में हार को देखकर उसे अन्दर पहुँचा दिया। लकड़हारे ने राजा को झुक कर सलाम किया और कहा, ''महाराज, मैं रानी का हार लेकर आया हूँ। भाग्य ने इसे मेरे दरवाजे पर लाकर छोड़ दिया।''

राजा ने हार को अपने हाथ में लिया और उसकी

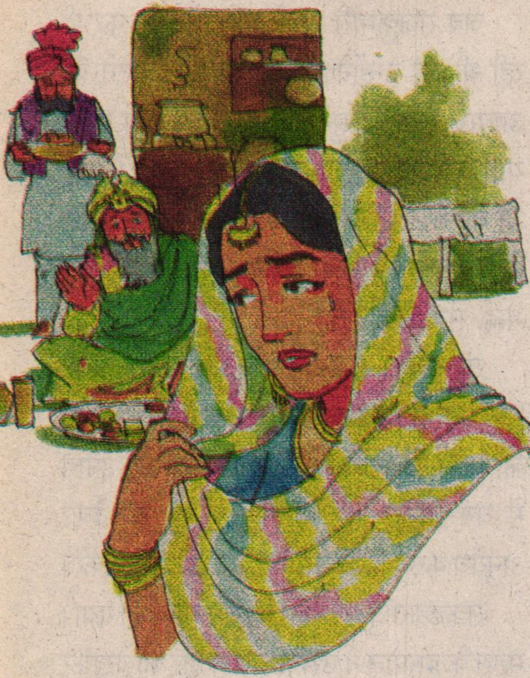

जाँच-परख की। यह वास्तव में रानी का ही हार था। ''हमलोग इसे लाकर वापस करने के लिए तुम्हारे कृतज्ञ हैं।'' राजा वे लकड़हारे से कहा। ''यह बताओ कि तुम कौन हो और हम तुम्हें इस एहसान के लिए क्या इनाम दें।''

लकड़हारे ने उत्तर दिया, ''मैं एक मामूली गरीब लकड़हारा हूँ और इनाम में सिर्फ यही मांगता हूँ कि महाराज कल मेरे और मेरी पत्नी के साथ मेरी झोंपड़ी में अकेले आकर भोजन करें।''

राजा को आश्चर्य हुआ परन्तु उसके सामने कोई चारा नहीं था, इसलिए उसे निमंत्रण को स्वीकार करना पड़ा। अतः दूसरे दिन शाम को राजा लकड़हारे की झोंपड़ी पर पहुँचा। राजकुमारी ने, जिसने अपनी पहचान छिपाने के लिए चेहरे पर घूंघट डाल लिया था, राजा को झुककर अभिवादन किया। वह चुपचाप उसे अन्दर ले गई और बैठने को कहा। फिर वह विविध प्रकार के मिष्टान्न ले आई। उसे खा लेने के बाद वह कुछ और मिठाइयाँ तथा अन्य मीठे पकवान लेकर आई। और हर बार वह राजा को सब मिठाई खा लेने पर जोर देने लगी। राजा अब ज्यादा मिठाई खा नहीं सकता था।

''मुझे माफ करना। अब ज्यादा मिठाई खाने के लिए न कहो। मैं बीमार हो जाऊँगा। उसके बदले कुछ नमकीन खाने को नहीं दे सकती?''

यह सुनते ही राजकुमारी ने अपना घूंघट हटा लिया। ''पिता'', उसने कहा, ''जब मैंने कहा था कि मैं आप से नमक के समान प्यार करती हूँ, चीनी और शहद की तरह नहीं, तब आप मुझ पर क्रोधित हो गये थे। और अब आप मिठाई से परहेज कर नमकीन माँग रहे हैं।''

राजा लज्जित होकर अपना सिर झुका लिया। ''माफ कर दो, मेरी बेटी!'' उसने कहा।

''मैं नमक का महत्व नहीं समझ सका। तुम सचमुच मुझे मेरी अन्य बेटियों से अधिक प्यार करती हो।''

राजकुमारी ने पिता को गले से लगा लिया। राजा ने अपनी बेटी की योग्यता और बुद्धिमानी को समझते हुए उसे और उसके पति को अपने राज्य का एक भाग दे दिया। राजकुमारी और उसके लकड़हारे पति ने राज्य के अपने हिस्से पर बुद्धिमानी और सुचारु रूप से शासन किया।

- करुणा कुमार

शत्रु मित्र बन गये

इजरायली सेना में एक कॉरपोरल गिलाड शाल्ट (२१) पैलेस्टिन उग्रवादियों, हामाज का कैदी है। जब वह ११ वर्ष की उम्र में पाँचवीं कक्षा का छात्र था, उसने एक कहानी लिखी जिसमें एक शार्क एक छोटी मछली को खाने जा रहा है। मछली शार्क से कहती है कि वे दोनों दोस्त बन जायें और आँख-मिचौनी खेलें। लेकिन उनकी माताएँ उन्हें सावधान करती हैं और वे अलग हो जाते हैं। कुछ दिनों के बाद वे मिलते हैं; तब शार्क पूछता है, "तुम मेरे शत्रु हो, पर क्या हमलोग समझौता कर सकते हैं?" कहानी के अन्त में शार्क और मछली तब से शान्तिपूर्वक रहने लगे। कहानी उसकी टीचर के पास रह गई। उसने उसे निकाला और गिलाड के पिता को दे दिया, जिसने अब उसे २९ पृष्ठों की एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका शीर्षक है- "जब शार्क और मछली पहली बार मिले।"

अजायबघर में पानी का जहाज

तीस मीटर लम्बा और तीन मंजिले मकान जैसा ऊँचा पानी का एक जहाज अब अजायबघर में है। यह ८०० वर्ष पूर्व पानी में डूब गया था और चीन के गुवांडांग प्रान्त में समुद्र में ३० मी. नीचे तब तक जलमग्न रहा जब तक इसे हाल में निकाला नहीं गया। इतिहासकारों ने इसे नाम दिया है- "दक्षिण चीन समुद्र सं-१"। उनका विश्वास है कि यह पोत चीन के पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। जहाज को उठाने के बाद, इसे तोड़ने के बदले, यह निश्चय किया गया कि इसे एक ऐसे तालाब के पानी में रखा जाये जिसका ताप और दबाव समुद्र के समान हो। अब क्रिस्टल पैलेस के नाम से ज्ञात अजायब घर आगन्तुकों को तालाब की खिड़कियों से जहाज को देखने का अवसर देगा। विश्वास किया जाता है कि जहाज में सोने-चाँदी के अतिरिक्त अमूल्य हजारों शिल्प उपकरण हैं।

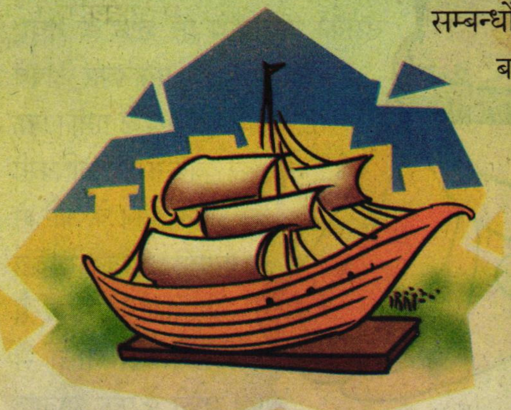

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३०

भाग्य और धैर्य

यह जिस व्यक्ति के साथ घटित हुआ, उसे सामान्य अर्थ में ख्याति प्राप्त व्यक्ति नहीं कह सकते, किन्तु जो अपनी अधीरता के लिए प्रसिद्ध है। आह! उसकी अधीरता ने उसे बहुत बड़ी सम्पत्ति से वंचित कर दिया।

अरबियन नाइट्स में कैरो के एक ऐसे युवक की कहानी है जो गरीब पैदा हुआ यद्यपि उसके पूर्वज दौलतमन्द थे। शीघ्र ही वह अनाथ हो गया और आजीविका के लिए उसे कठिन परिश्रम करना पड़ा। एक रात सपने में उसने एक आवाज सुनी, ''बगदाद चले जाओ और वहाँ तुम्हें एक छिपे खजाने का पता चलेगा।'' वह युवक उस सुदूर शहर की ओर पैदल जाने लगा। पूरे दिन चलने के बाद उसने एक मस्जिद में आराम किया। उसी मस्जिद में पीछा करती हुई पुलिस से बचने के लिए कुछ चोर आकर छिप गये। शीघ्र ही उन सबको पुलिस ने पकड़ लिया। उनके साथ युवक भी पकड़ा गया। पुलिस के प्रधान ने उसे निर्दोष पाया और उससे पूछा कि वह बगदाद क्यों जा रहा है। युवक ने उसे अपने सपने के बारे में बताया। पुलिस का प्रधान हँसता हुआ बोला, ''वर्षों से एक आवाज मुझे कह रही है कि तुम कैरो जाओ जहाँ तुम्हें एक घर के पश्चिमी कोने पर एक ताड़ के पेड़ के नीचे एक उजाड़ कुएं में गड़ा हुआ छिपा खजाना मिलेगा। परन्तु मैंने कभी परवाह नहीं की। तुमने उसी तरह का सपना सिर्फ एक बार देखा और इस पर विश्वास कर लिया!''

दूसरे दिन शाम तक वह युवक बगदाद पहुँच गया। शहर के एक पहरेदार को उसकी गतिविधि पर शक हो गया, इसलिए वह उसे पकड़कर अपने अधिकारी के पास ले गया। एक बार फिर युवक ने उस अधिकारी को अपने सपने के बारे में बताया। अधिकारी हँसा और बोला, ''लड़के, मैं पिछले दस सालों से अपने सपने में एक आवाज

सुन रहा हूँ जो मुझे कैरो जाने के लिए सलाह दे रही है जहाँ एक घर के पश्चिमी कोने पर, एक ताड़ पेड़ के नीचे एक सूखे कुएं में मुझे एक खजाना मिलेगा। आवाज ने कहा कि उस घर के चार दरवाजे हैं जिसके तीन दरवाजे घर के मालिक की पैदाइश के समय से ही बन्द हैं। पर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया। तुमने एक बार आवाज सुनी और बगदाद आने की जहमत उठा ली! घर लौट जाओ।''

वह युवक अधिकारी को 'धन्यवाद' कह कर जल्दी ही घर वापस आ गया। अधिकारी ने छिपे खजाने का जो विवरण दिया था, उससे वह भली भाँति परिचित था। यह उसी का अपना घर था जिसके तीन दरवाजे बन्द थे। घर के पश्चिमी कोने पर ताड़ का एक पेड़ था जो एक सूखे कुएं की ओर झुका हुआ था। युवक ने कुएं के तल की खुदाई की और छिपा हुआ खजाना निकाल लिया!

यह कितने दुख की बात है कि जिस व्यक्ति को हम याद कर रहे हैं, वह लाखों गुना अधिक मूल्यवान खजाना पाते-पाते रह गया।

जब हैदराबाद में निजाम शाही की स्थापना हो गई तब उस खान्दान से जुड़े हुए बहुत लोग वहाँ अपनी किस्मत की खोज में आये। उनमें एक था अली हाफिज़। वह जमीन का एक बड़ा टुकड़ा खरीदना चाहता था। एक वृद्ध व्यक्ति बहुत सस्ते दाम पर एक बड़ा क्षेत्र यह कहते हुए देने को तैयार हो गया, ''यदि मैं जल्दी मरनेवाला न होता तो इस जमीन को न बेचता, क्योंकि मेरे पूर्वजों को विश्वास था कि इसमें सोना पैदा होगा। जनश्रुति के अनुसार उसका समय आ

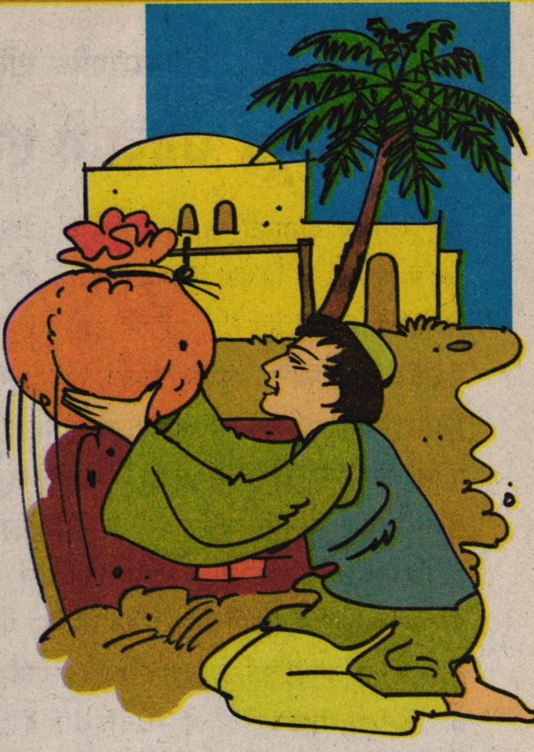

रहा है। परन्तु, मैं मर रहा हूँ। मेरे मरने के बाद वह दौलत मेरे किस काम की?''

अली हाफिज ने जमीन खरीद ली, लेकिन वह जल्दी से जल्दी पैसा कमाना चाहता था। उसने थोड़ी ज़्यादा कीमत पर जमीन बेचना चाहा। मरणासन्न वृद्ध व्यक्ति ने कम से कम एक साल तक उसे धीरज रखने की सलाह दी। परन्तु अली हाफिज ने जमीन बेच दी और किसी दूसरी योजना में उन पैसों का निवेश कर दिया।

दूसरे ही साल उस जमीन के नीचे हीरा पाया गया और वह स्थल गोलकुण्ड हीरा खान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अली हाफिज की नयी योजना भी विफल हो गई। वह तंगहाली में मर गया।

- एम.डी.

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-९

निगूढ़ प्रदेश में एक साहसी सर्वेक्षक

वह उन्नीसवीं शताब्दी का मध्य काल था। यह वह काल था जब ब्रिटिश साम्राज्य त्वरित गति से विस्तारित हो रहा था। अंग्रेजों द्वारा भारत उपखंड का मानचित्र सुस्पष्टतापूर्वक रेखांकित किया गया था। किन्तु भारत देश के हिमालय पर्वतों की सरहदों से सटे हुए प्रांतों के भौगोलिक, राजनैतिक, सैनिक विषयों से वे बिलकुल अपरिचित थे। मुख्यतया, ''दुनिया की छत'' के नाम से प्रख्यात निगूढ प्रदेश तिब्बत के बारे में वे बिलकुल जानते नहीं थे। अठारहवीं शताब्दी के अंत में भारत देश में व्यवस्थित ग्रेट ट्रिग्नोमेट्रिकल सर्वे संस्था ने जिन मानचित्रों का रेखांकन किया, उनमें तिब्बत बहुत बड़ा खाली प्रदेश मात्र था। उसकी राजधानी लासा भी केवल कल्पना मात्र थी। उसका सर्वेक्षण करके संसार के मानचित्र में उसे चढ़ाना कैसे संभव होगा?

१८५२ में ग्रेट ट्रिग्नोमेट्रिकल सर्वे संस्था के साहस प्रिय युवा अधिकारी थामस जॉर्ज मॉण्टगोमरी को कश्मीर का मानचित्र तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। वातावरण प्रतिकूल था, कदम-कदम पर अपरिमित अवरोध थे, जोखिम था, तिसपर १८५७ में भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम छिड़ चुका था, फिर भी इन सभी अवरोधों का सामना करते हुए मांटगोमरी दृढ़ निश्चय के साथ अपना काम करता गया। १८६४ तक उन्होंने हिमालय की दक्षिणी दिशा में स्थित कश्मीर का मानचित्रण किया। हिम पर्वतों सहित १४०० वर्ग मीलों को उन्होंने नापा। उस समय वे तिब्बत जाना चाहते थे। मेघों से आच्छादित अपने राज्य में परदेशियों को, विशेषतया यूरोपियनों का वहाँ आना मना था। इस वजह से

वे आगे बढ़ नहीं पाये। पर, वे सदा उसी के बारे में सोचते रहते थे और आखिर एक विलक्षण समाधान का मार्ग खोज निकाला।

समर्थ स्थानिकों को उन्होंने चुना, उन्हें सर्वेक्षण के काम में प्रशिक्षित किया और उन्हें बताया कि सही सामग्री के साथ गुप्त रूप से उन्हें वहाँ भेजा जाए तो काम में सुविधा होगी तथा तद्वारा भूगोल शास्त्र की अपूर्व सेवा होगी। योजना यद्यपि खतरों से खाली नहीं थी, फिर भी उन अधिकारियों का मानना था कि कार्य संभव है। सरहदी प्रांतों में ऐसे साहस भरे कामों को कर सकने की योग्यता रखनेवाले व्यक्तियों की खोज शुरू कर दी गयी।

बड़ी कोशिशों के बाद कुछ समर्थ व्यक्तियों का समीकरण किया गया और तिब्बत जाकर, वहाँ के भौगोलिक विषयों की जानकारी प्राप्त करके दो सालों के अंदर लौटने के उद्देश्य को सामने रखकर उन्हें दो सालों तक प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त पंडितों में से एक थे, उत्तरांचल के मिलाम ग्राम के वासी व वहाँ की पाठशाला के प्रधान अध्यापक नैनसिंग। उन्हें हत्यारे लुटेरों का सामना करना होगा, दुर्गम पर्वतीय मार्गों में मौसम उनके प्रतिकूल होगा, हर घाटी पर सावधान सरहदी पहरेदार तैनात होंगे, फिर भी ऐसे अवरोधों को पार करते हुए १८६५ के प्रारंभ में जाने को वे तैयार हो गये।

संन्यासी के वेष में वे निकले, मानों यात्रा करने जा रहे हों। इसी वेष में वे तिब्बत के सरहदी शहर क्यिरांग में पहुँचे। पर, अधिकारियों ने उनकी बातों का विश्वास नहीं किया और आगे जाने के लिए अनुमति नहीं दी। इस वजह से वे नेपाल लौट आये और वहाँ से लासा से होते हुए मानसरोवर जानेवाले संन्यासी की तरह व्यापारियों के कारवाँ के वाहन में निकले।

बर्फ से भरी हुई तिब्बत की दक्षिणी घाटियों से होते हुए व्यापारियों के कारवाँ में जब वे जा रहे थे, तब बौद्ध संन्यासी की तरह नैनसिंग हाथ में जपमाला फिराते हुए बड़ी ही सावधानी से आगे बढ़ने लगे। उनके हाथों में सौ मनकों की जपमाला थी, जिसकी सहायता से वे स्पष्ट रूप से जान पाते थे कि उन्होंने कितने मील पार किये। वे तिब्बत नगर के दलाई लामा के बाद के पदाधिकारी ग्यारह वर्ष के पंचनलामा से मिले।

एक दिन प्रातःकाल अकस्मात् लुटेरों ने व्यापारियों के कारवाँ पर हमला किया। उस समय नैनसिंग घोड़े पर सवार होकर वहाँ से तेज़ी से निकल गये। यों गाड़ी में बैठकर, पैदल चलकर, घुड़सवारी करके यात्रा की और अंत में लासा नगर पहुँच पाये।

पहरेदार उन्हें कहीं देख न लें, उनपर कहीं संदेह न करें, इस भय के कारण वे आँखें बंद करके ध्यान-मग्न होने का नाटक करते थे। अपने कपड़ों में छिपाये प्रार्थना चक्र को बाहर निकालते थे और उसे घुमाते हुए, ''ओं मणि पद्मेहम्!'' का उच्चारण करते हुए मंत्र का जप करने लगते थे। अधिकारी प्रार्थना में रुकावट डालना नहीं चाहते थे, इसलिए वे चुपचाप चले जाते थे। प्रार्थना चक्र में, साधारणतया जहाँ प्रार्थना श्लोक होने चाहिये, वहाँ के अधिकारियों की आँखों से बचाकर आवश्यक समाचार छिपा देते थे।

हाथ में प्याला लिये दूर फैले पर्वतों की ओर देखते हुए बैठ जाते थे। देखनेवाले समझते थे कि वे चाय पी रहे हैं। पर, वे उस समय को सांकेतिक सामग्री की सहायता से वहाँ से पर्वतों की दूरी को नापते थे। सूर्य-चंद्र व नक्षत्रों के स्थानों को गिनने में निमग्न रहते थे। यों उन्होंने अक्षांश, देशान्तर रेखाओं की गणना की। उनकी छड़ी थर्मामीटर बन गयी। उसे चाय के पानी में डुबोते थे और बायलिंग पाइंट की सहायता से जान पाये कि लासा समुद्र की सतह से ११,७०० फुट की ऊँचाई पर है। वर्तमान गणित की दृष्टि से भी यह गिनती अद्भुत है। संन्यासी के वेष के पहनावे के अंदर उन्होंने कम्पास, एक क्रोनोमीटर वाच तथा कुछ मुख्य सामग्री छिपा रखी थी।

उन्होंने खुद देखा कि लोगों ने एक ऐसे आदमी का सिर काट डाला, जिसने बिना अनुमति के लासा में प्रवेश किया था। वहाँ से जल्दी से जल्दी निकल जाने के लिए यार्लुंग सैंगपो नदी तट से होते हुए उन्होंने यात्रा की और एक और व्यापारी कारवाँ के साथ लौट चले। दो महीनों की यात्रा के दौरान लामा वेषधारी नैनसिंग ने १००० कि.मी. की नदी के प्रवाह को नापा। उन्हें यह भी संदेह हुआ कि कहीं यह नदी भारत देश में बहती हुई ब्रह्मपुत्र तो नहीं है। इस संदेह के ध्रुवीकरण के लिए उन्होंने यार्लुंग में चिह्न भरे छोटे-छोटे लक्कड डाले। उन्हें बाद मे असम में पाया तो यह साबित हो गया कि इन दोनों नदियों का आविर्भाव एक ही जगह से हुआ है।

नैनसिंग ताड़ गये कि सरहदी पहरेदार ही नहीं बल्कि साथी व्यापारी सहित उनपर संदेह करने लगे। उन्हें लगा कि किसी प्रलोभन के वश में आकर हो सकता है व्यापारी उन्हें पहरेदारों के सुपुर्द कर दें, इसलिए आधी रात को उनसे दूर भाग गये और डेढ़ साल तक अकेले ही यात्रा करते हुए भारत पहुँचे।

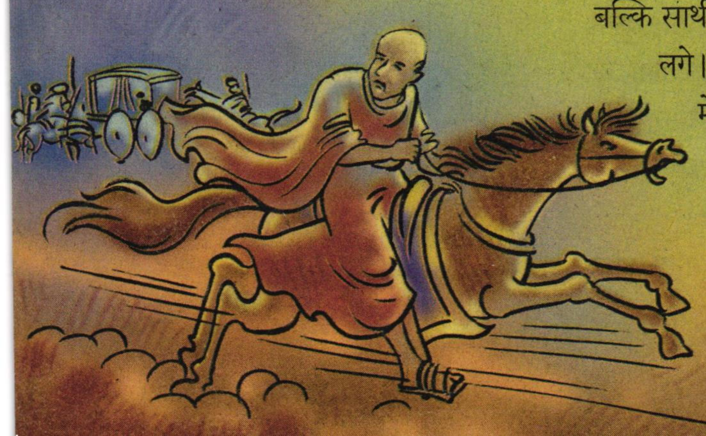

मार्गमध्य में उन्होंने बुद्ध की बड़ी-बड़ी सोने की मूर्तियाँ देखीं, जिन्हें देखकर उन्हें संदेह हुआ कि तिब्बत में सोने की खानें हो सकती हैं। १८६७ में उन्होंने एक और साहस-भरी यात्रा की और ठोक जलुँग नामक सोने की खानों को खोज निकाला। हालांकि वे संन्यासी के वेष में ही थे, फिर भी उन खानों के अधिकारियों को उनपर संदेह हुआ। नैनसिंग ने तुरंत एक सुंदर प्रवाल आभूषण निकाला और प्रार्थना चक्र को घुमाते हुए जाकर उस अधिकारी की पत्नी को दिया। उससे खुश होकर अधिकारी ने अपने पास करीब एक सौ किलो का जो सोना था, उसे दिखाया। यों ख़तरा टल गया।

सन् १८७४ में बौद्ध संन्यासी की तरह कुछ लोगों के साथ बकरियों का मालिक बनकर फिर एक और बार नैनसिंग लासा से होते हुए जाकर चीन की राजधानी (पीकिंग) का मार्ग ढूढ़ने निकल पड़े। पर, एक साल के बाद लासा पहुँचते-पहुँचते वहाँ अफवाहें फैल गयीं कि ब्रिटिश गुप्तचर वहाँ आये हुए हैं। नैनसिंग ने अपने को ख़तरे में पाया और अब तक जो-जो जानकारी इकट्ठी की, उसे दो सहचरों के द्वारा भारत भेज दी। इसके बाद उनके पास जो-जो अनावश्यक चीज़ें थीं, उन्हें एक थैली में डाल दी और जिस सराय में वे ठहरे थे, उसके मालिक से कहा, "हमें नगर के उत्तर स्थित पवित्र स्थल के दर्शन करने हैं। जब तक नहीं लौटूँगा, तब तक इन्हें अपने पास सुरक्षित रखियेगा।" सराय के मालिक ने मान लिया। नैनसिंग अपने अनुचरों के साथ थोड़ी दूर तक उत्तरी दिशा में गये ओर अंधेरा छा जाते ही दक्षिण की ओर मुड़कर निकल पड़े। फिर सुरक्षित स्वदेश पहुँचे।

ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की और माना कि नैनसिंग सुप्रसिद्ध अन्वेषक लिविंगस्टोन व ग्रांट जैसे महान अन्वेषक हैं। वे एशिया के ऐसे निगूढ़ प्रदेशों में गये, जहाँ किसी एक यूरोपियन ने भी जाने का साहस नहीं किया। उन्होंने जिन-जिन प्रांतों के बारे में विवरण प्रस्तुत किया ब्रिटिश सरकार ने उन्हें विश्वसनीय माना। उन्हें एक साहसी ठहराते हुए रायल जियोग्राफिकल सोसाइटी ने स्वर्ण पदक प्रदान करके उनका सत्कार किया।

(ए.के.डि.)

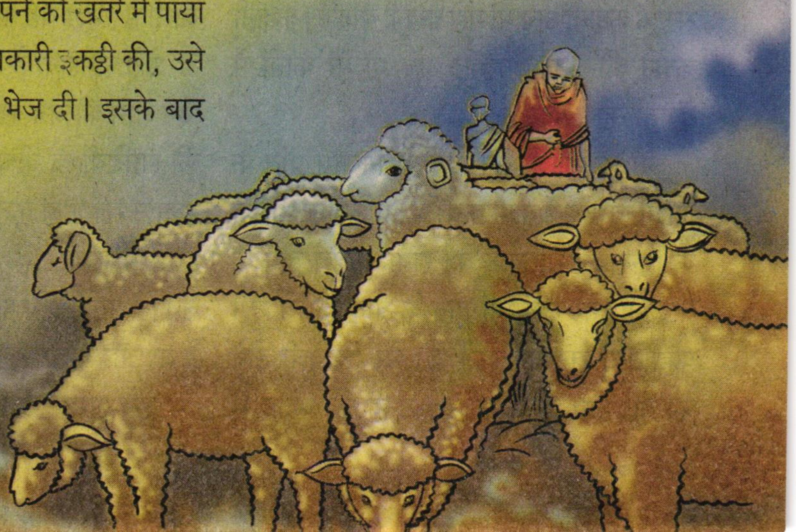

कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - १२

आन्ध्र प्रदेश की नाजविद निवासी मालती चेन्दूर मुख्यतः स्वयं-शिक्षित थीं। उनकी पहली कहानी 'आनन्द वाणी' में प्रकाशित हुई, जिसमें उनका उपन्यास 'चम्पकम चेदा पुरुगुलु' भी धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया गया। जब 'आन्ध्र प्रभा' का प्रकाशन १९५२ में आरम्भ किया गया, तब इसका स्तम्भ 'नारी तथा गृह' मालती को दिया गया, जिसे उन्होंने ४५ से अधिक वर्षों तक निभाया। सबसे अधिक लोकप्रिय तेलुगु साप्ताहिक 'स्वाति' में वह एक नियमित स्तम्भ में लिखती रहीं। उनकी कृतियाँ हिन्दी, गुजराती, उड़िया तथा कन्नड़ में अनूदित हो चुकी हैं। उन्होंने लगभग ३०० अंग्रेजी उपन्यासों का तेलुगु में अनुवाद किया है। उन्हें १९९२ में भारतीय भाषा पुरस्कार (कोलकाता), १९८७ में आन्ध्र साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा १९९३ में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पहली महिला लेखिका हैं जिन्हें उपन्यास के लिए पुरस्कार दिया गया।

बचपन में सुनी कहानी

अन्य बच्चों की तरह मैंने भी सियार-कौआ, गरीब बुढ़िया जैसी कहानियाँ सुनी होंगी; पर वे मुझे याद नहीं हैं। जब मैं सात-आठ साल की थी, तब चांदनी रात में चटाई बिछाकर अपने बहनोईजी से कई कहानियाँ सुना करती थी। उनमें से एक कहानी अब भी मुझे बखूबी याद है। कहानी बताने की उनकी पद्धति अब भी मेरे कानों में गूँजती रहती है।

मेरे बहनोईजी उन दिनों में निजाम प्रांत के शिक्षा विभाग में काम करते थे। प्रशिक्षण कॉलेज के प्रिन्सपल रह चुके थे। सेवा-निवृत्त होने के बाद भी, मेरे रचयित्री होने के बाद भी, वे मुझे कहानियाँ सुनाया करते थे। मेरे रचयित्री होने का पूरा श्रेय उन्हीं को है। उन्हीं की वजह से कल्पना शक्ति मुझमें जगी। वे कहानियाँ बताने में इतने प्रवीण थे कि मुझे लगता था, मानों मैं आकाश में उड़ रही हूँ। उनकी बतायी अनेक कहानियों में से ''अण्डा जैसा धान्य दाना'' नामक कहानी आज भी मुझे कल्पना लोक में विचरने ले जाती है। मुझे यह कहानी बेहद पसंद है।

मेरा समझना है कि यह लोक कथा है। एक दिन शाम को जब बच्चे खेल रहे थे, तब उन्हें कांटों की झाड़ियों के बीच एक अंडा दिखायी पड़ा। बच्चों ने सहज ही कुतूहलवश उस अंडे को अपने हाथों में लिया और उसे बड़े ही ग़ौर से देखने लगे। वे इस निर्णय पर नहीं आ सके कि यह अंडा है या और कुछ।

उस समय उस रास्ते से गुज़रते हुए एक

आदमी ने उन बच्चों को एक आणा देकर उसे खरीद लिया। वह आदमी भी उस अंडे को ग़ौर से देखने लगा। उसने उसे उलट-पलटकर खूब देखा, पर उसकी समझ में नहीं आया कि यह किस पक्षी का अंडा है। उसने सोचा 'इस अंडे को ले जाकर राजा को दूँ तो वे अवश्य ही पुरस्कार देंगे।' बड़ी आशा लेकर वह उस अंडे को राजा के पास ले गया। राजा ने उस आदमी को पुरस्कार दिया और स्वयं तल्लीन होकर देखने लगे कि यह किस पक्षी का अंडा हो सकता है। किन्तु उनकी भी समझ में नहीं आया। उन्होंने उसे राज दरबार के दरबारियों के हवाले किया और यह बताने के लिए कहा कि यह किस पक्षी का अंडा है। उन्होंने भी उसे अपने हाथों में लिया और उलट-पलटकर देखा। वे भी किसी निर्णय पर नहीं आ पाये।

वह अंडा जब एक खिड़की में रखा गया तब एक मुर्गे ने उसे अपनी चोंच से मारा। फिर भी वह नहीं फूटा। अब विश्वस्त रूप से मालूम हो गया कि वह अंडा नहीं है। अब इस समस्या का हल कैसे होगा, कौन करेगा? सभासदों की सलाह लेकर राजा ने सब पंडितों और विज्ञों को बुलवाया और पूछा, ''यह कौन-सा अंडा है? असल में यह अंडा है या नहीं? फैसला कीजिये और बताइये।'' उन सबने उसे ध्यान से देखा, उसकी खूब परीक्षा की और कहा, ''यह हमसे संबंधित विषय नहीं है। इसके बारे में वे ही लोग बता सकते हैं, जो भूमि पर खेती करके जीते हैं। आप देश के किसानों को बुलवाइये और उनकी राय लीजिये।''

राजा ने मुनादी पिटवायी कि ''कृषि क्षेत्र में जो प्रवीण हैं, उनमें से कोई आगे आये और इस पहेली को सुलझाये।'' पर कोई नहीं आया।

इतने में सैनिक राज्य भर में ढूँढ़कर एक ऐसे किसान को ले आये, जो बढ़िया फसल उगाता था, जिसकी भूमि बहुत ही उपजाऊ थी। यह किसान चल नहीं सकता था। दो लकड़ियों के आधार पर चलता हुआ वह बूढ़ा किसान राजा के पास आया। वह बूढ़ा किसान सुन नहीं सकता था, उसे दिखायी भी नहीं देता था। यानी वह किसान लंगड़ा, बहरा और अंधा था। राजा के पास जो अंडा था, उसे उसने टटोलकर देखा और

कहा, "मैंने अपने पूर्वजों से सुना है कि वे इतने बड़े-बड़े मक्के उगाते थे, जिनके दाने अंडे जैसे बड़े-बड़े होते थे। पर मैंने तो इतना बड़ा मक्का कभी नहीं उगाया। पर मेरे पिताजी यह कहा करते थे कि अपने जमाने में वे इतने बड़े-बड़े धान्य के दाने उगाते थे।" कांपते हुए बड़े ही नीरस स्वर में उस किसान ने कहा। उसकी बातें सुनकर राजा निराश नहीं हुए। उन्होंने अपनी हठ भी नहीं त्यजा।

राजा ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे इस बूढ़े के पिता को ढूँढ़कर ले आयें।

दूसरा जो किसान आया, लकड़ी के सहारे वह धीरे-धीरे लंगड़ाता हुआ आया। आँखों से वह देख तो सकता था, पर उसे सुनाई नहीं पड़ता था। वह आदमी देखने में इतना कमज़ोर भी नहीं लगता था। राजा ने उसे अंडा जैसे धान्य के दाने को दिखाते हुए पूछा, "क्या तुमने इसे कभी देखा? क्या अपने खेत में तुमने इसे उपजाया?" तो उसने कहा, "नहीं, मैंने कभी नहीं देखा, उपजाया भी नहीं। ऐसे बड़े धान्य के दाने के बारे में मेरे पिताजी कहा करते थे। मेरे पिताजी से पूछियेगा।"

उस तीसरे दादा को यानी दो लकड़ियों के सहारे आये किसान के दादा को सिपाही ढूँढ़कर ले आये। यह बूढ़ा आराम से पैदल चल कर आया। उसके दोनों पैर बिलकुल ही सही सलामत थे। आदमी भी हट्टा-कट्टा था। उसे अच्छी तरह सुनायी पड़ता था। आँखें देख सकती थीं।

राजा ने अंडा जैसा बड़ा दाना उसके हाथ में रखा और पूछा, "दादा, क्या कभी ऐसे धान्य के दाने को इसके पहले कभी देखा?"

दाने को हथेली से पकड़कर उसने कहा, "कितने लंबे समय के बाद इतना सुंदर धान्य देखने को मिला। अपने बचपन में हमारे खेत में ऐसा ही धान्य उपजाते थे।" आश्चर्य और आनंद से भरे स्वर में उसने कहा।

"क्या इतना बड़ा दाना अपने खेत में उपजाते थे?" राजा ने पूछा।

"हाँ, हमारे खेत में अंडे जैसे बड़े-बड़े दाने उगाते थे। उस खेत से उगे हर दाने से हथेली भर का आटा निकलता था। इससे वहाँ के सब लोग पेट भर खाते थे और संतृप्त होते थे", बूढ़े ने राजा से स्पष्ट कहा।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-३ अप्रैल २००८ उत्तर:

१. उत्तर प्रदेश; २. मणिपुर; ३. कोलकाता, यहीं पर प.बंगाल असेम्बली की बैठक होती है; ४. सिक्किम; ५. कलिंग; ६. पुदुचेरी; ७. उत्तराखण्ड; ८. आसाम-ब्रह्मपुत्र; ९. पंजाब तथा हरियाणा; १०. उत्तरप्रदेश-३१; ११. हरियाणा; १२. जम्मू तथा कश्मीर।

राजा ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा, ''दादा, तुम्हारा खेत कहाँ है?''

''वह किसी एक का खेत नहीं था। सबका था। भगवान ने खेती करने के लिए यह भूमि सब मनुष्यों को दी।'' दादा ने कहा।

''जो उपजाते थे, वह सबके लिए पर्याप्त होता था? बचा-खुचा क्या करते थे?'' राजा ने पूछा।

''बेचना-खरीदना हम जानते ही नहीं थे। सच कहा जाए तो उस ज़माने में हम धन के बारे में जानते ही नहीं थे। सब मिल-जुलकर मेहनत करते थे। जो उपजाते थे, सब आपस में बांट लेते थे और पेट भर खाते थे। हमारे बचपन में धान्य का दाना इतना बड़ा और इतना मजबूत होता था'', दादा ने कहा।

''तो फिर अब ऐसा क्यों नहीं है?'' राजा ने पूछा।

''मानव में धन की आशा बहुत बढ़ गयी। कोई एक मेहनत करे तो दूसरा उसे खरीद लेता है। यह धन क्या आया, फसलें और दाने क्रमशः छोटे-छोटे होते जा रहे हैं'', दादा ने कहा।

''दादा, मेरा एक संदेह है। तुम बिलकुल सही-सलामत हो। पैर, कान, आँखें सब इंद्रियाँ अच्छी तरह काम कर रही हैं। तुम्हारे बेटे का एक पैर नहीं है। पोते के दोनों पैर नहीं हैं। तुमसे भी अधिक बूढ़े लग रहे हैं। इसका क्या कारण है?'' राजा ने पूछा।

''अपने जमाने में हम खूब मेहनत करते थे और खेती करते थे। समान रूप से मेहनत करते थे और सब एक समान खाते-पीते थे। अब मेहनत करनेवाले कम हो गये, बैठकर खानेवालों की संख्या बढ़ गयी। मेरा बेटा और मेरा पोता दोनों इसी श्रेणी में आते हैं। भगवान ने हमें यह भूमि दी, परिश्रम करके हल चलाने और फसल उगाने के लिए। भूमाता की दी हुई फसल को बराबर बांटने के लिए। पर, अब ऐसा नहीं कर रहे हैं। इसी वजह से धान्य बीज दुबले-पतले हो गये हैं।'' वृद्ध ने गंभीर स्वर में कहा।

कितने ही साल पहले यह कहानी मेरे बहनोईजी ने सुनायी थी। तब मुझे मालूम नहीं था कि यह टालस्टॉय की कहानी है। सूर्य चंद्र की भी दृष्टि जहाँ नहीं जाती, वहाँ रचयिता की दृष्टि जाती है। टालस्टॉय ऐसे महान दार्शनिक थे।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इस प्रश्नोत्तरी से भारत के पुरातन अतीत की खोज करने में मदद मिलेगी।

१. सम्राट बाबर के अधीन एक मुस्लिम शासक था जिसने महाभारत का अनुवाद बंगला में कराया था। वह शासक कौन था?

२. उसे कर्नाटक संगीत का आदि गुरु या पितामह कहा जाता है। यह पन्द्रह शताब्दी में हुआ था। यह संगीतज्ञ कौन था?

३. योग की कौन सी शाखा रोगमुक्त होने के लिए शारीरिक व्यायामों के विषय में बताती है?

४. कनिष्क के दरबार में एक नाट्य लेखक था जिसने बुद्ध के जीवन पर एक नाटक लिखा था। वह कौन था? नाटक का नाम क्या है?

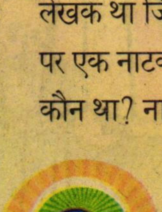

५. 'पंच सिद्धान्तिका' गणित-ज्योतिष पर एक बृहत भारतीय ग्रन्थ है जो छठी शताब्दी में लिखा गया था। किसने लिखा?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-५

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने के प्रश्न भारतीय अर्थ-व्यवस्था से सम्बन्धित हैं।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु. ५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें जो करना चाहिये: १. एक कागज पर सारे उत्तर लिख लो; २. अपना नाम, उम्र तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो: **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-५**, ४. प्रविष्टि ३० जून से पहले हमें मिल जाना चाहिये। उत्तर अगस्त २००८ के अंक में प्रकाशित होंगे।

१. वार्षिक केन्द्रीय बजट संसद में सामान्य रूप से कब प्रस्तुत किया जाता है?
२. किसने पहली बार भारत की राष्ट्रीय आय के आँकड़े तैयार किये?
३. "मैं एक ही कल्चर के विषय में जानकारी रखता हूँ, और वह है ऐग्रिकल्चर।" यह वक्तव्य किसका है?
४. रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना कब हुई? इसका राष्ट्रीयकरण कब हुआ?
५. भारत सरकार का बैंक कौन-सा है? इसका पहले क्या नाम था?
६. मुम्बई में दलाल स्ट्रीट भारत के व्यापार का पर्यायवाची है। इसके नाम का महत्व क्या है?
७. योजना आयोग का चेयरमैन कौन होता है?

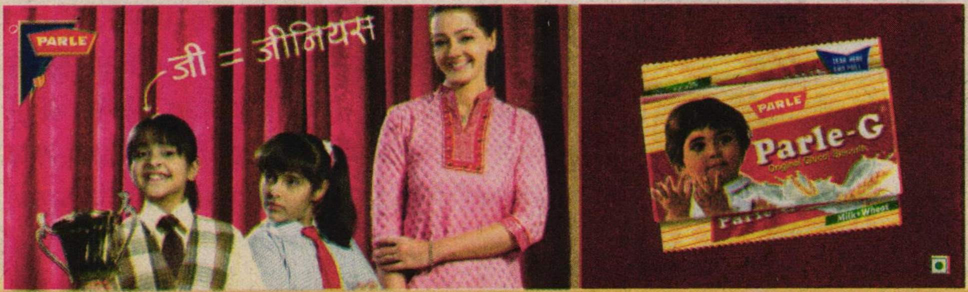

ओलम्पिक ज्योति तथा मशाल

भारत, ओलम्पिक मनोभाव में तब आ गया जब विगत १७ अप्रैल को ओलम्पिक मशाल नई दिल्ली पहुँची और उसे राष्ट्रपति भवन से इण्डिया गेट तक २.३ कि.मी. से अधिक दूरी तक रिले किया गया। करीब ७० खिलाड़ियों और यशस्वी व्यक्तियों ने रिले में भाग लिया।

इसके पूर्व बीजिंग ओलम्पिक संगठन समिति के उपाध्यक्ष मि. जियांग यू ने, जिन्होंने एक लालटेन में सुरक्षित ओलम्पिक ज्योति के साथ यात्रा की, दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित को इसे सौंपा। श्रीमती दीक्षित ने तब मशाल को जलाकर उसे भारतीय ओलम्पिक असोसियेशन के अध्यक्ष श्री सुरेश कलमादी को सौंपा। रिले ओलम्पियन 'फ्लाइंग सिक्ख' मिल्खा सिंह से आरम्भ किया गया। रिले के अन्त में हमारे टेनिस चैम्पियन लियेण्डर पायस तथा महेश भूपति ने संयुक्त रूप से इण्डिया गेट के निकट निर्मित कुण्ड को प्रज्वलित किया; तत्पश्चात मशाल को थाईलैण्ड की ओर पुनः इसकी यात्रा को जारी रखने के लिए वापस ले लिया गया। जब तक यह मशाल इस वर्ष के ओलम्पिक खेलों के, निश्चित समयानुसार, उद्घाटन तक बीजिंग पहुँचेगी, तब तक यह पाँच महादेशों की २१ राजधानियों से होती हुई १,३७,००० कि.मी. (८५,००० मील) की दूरी तय कर चुकी होगी।

ओलम्पिक ज्योति का उद्भव प्राचीन खेलों के समय (७७६ बी.सी.से ३९३ ए.डी.तक) से हुआ। इसे एक बड़ी पुजारिन के निर्देशन में शानदार समारोह के साथ सूर्य की किरणों की सहायता से प्रज्वलित किया जाता था और ग्रीस में ओलम्पिया के हेरा मन्दिर में रखा जाता था। दो हजार सात सौ वर्षों से अधिक बाद में इस अनुष्ठान को फिर से दुहराया गया जब विगत २४ मार्च को ग्रीक अभिनेत्री मारिया नापलियोतू ने बड़ी पुजारिन की भूमिका निभाई, हेरा मन्दिर के सामने मशाल जलाई और इसे ग्रीक खिलाड़ी एलेक्जेण्ड्रो निकोलैडिस को सौंपा, जिसने ग्रीस की राजधानी एथेन्स में २००४ के खेलों में रजत पदक जीता था (चित्र में देखें)।

ग्रीस में सर्वत्र दिनों तक रिले के पश्चात ज्योति का भार २००८ के मेज़वान राष्ट्र चीन द्वारा ग्रहण किया गया।

आधुनिक खेलों के लिए, पहली बार, १९२८ के अम्सटरडम खेलों के समय ओलम्पिक ज्योति प्रज्वलित की गई। प्रथम मशाल-रिले-दौड़ १९३६ में बर्लिन खेलों के लिए की गई। करीब ३,००० धावकों ने मशाल को ओलम्पिया से बर्लिन पहुँचाया। मशाल को इस्पात से बनाया गया था।

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination.
Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language.
Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick whatever applies)

☐ **English** ☐ **Language**.. ☐ **Junior Chandamama**

My Name .... Date of Birth ....

Send my issues to: Mr/Ms..

Address ....

....

....

City.. State .... Pin ....

Telephone.. Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees...

Cheque/DD no...Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. (Send At-par cheques or add Rs. 60 for non-Chennai cheques) Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscribtion form to :
Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year.
English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.
***Conditions apply.**

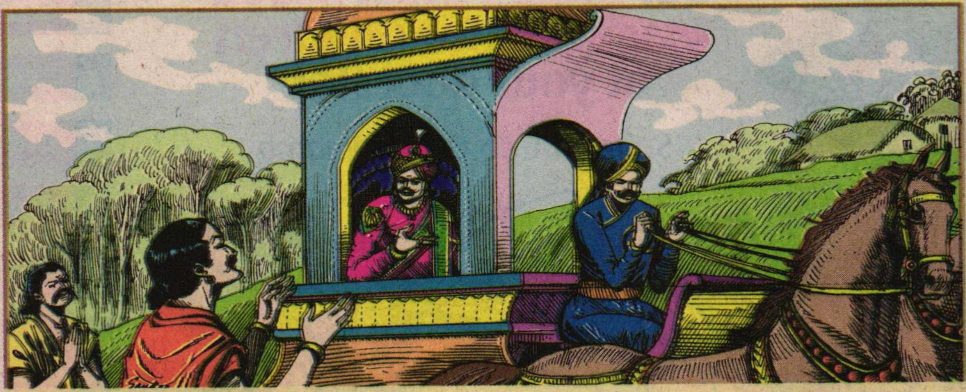

महानता की कसौटी

ब्रह्मदत्त, जब काशी राज्य पर राज्य करते थे, बोधिसत्व ने काशी नरेश के पुत्र के रूप में जन्म लिया। उसने तक्षशिला में जाकर सोलह वर्ष की आयु के पूर्व ही समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया। इसके बाद अपने पिता की मृत्यु होने पर वह काशी का राजा बना और धर्माचरण करते हुए राज-काज चलाने लगा।

बोधिसत्व के शासन काल में उनकी प्रजा किसी प्रकार के कष्ट, अनिष्ट, अन्याय और अत्याचार के बिना सुखमय जीवन बिताने लगी। इस कारण से न्यायालय के लिए कोई काम न रहा। अनेक वर्ष बीत गये पर न्याय की माँग करते हुए एक भी न्यायालय में नहीं पहुँचा। जनता के बीच कोई आन्दोलन नहीं था, इस कारण से राजा को यह समझने में कठिनाई हुई कि जनता उसके विषय में क्या सोचती है और उसके शासन में क्या त्रुटियाँ हैं। कम से कम किसी मुकदमे को लेकर न्यायालय की शरण लेने वाले भी होते तो राजा को अपनी त्रुटियों को समझने में सहायता मिल जाती। परन्तु राजसभा की ओर झाँकने वाला तक कोई न था।

इसलिए राजा एक दिन अपने रथ पर सवार हो नगर घूमते हुए जो भी उनके सामने आया उससे पूछने लगे कि मेरे शासन में तुम्हें क्या त्रुटि दिखाई देती है। पर सब यही उत्तर देते थे, "महाराजा, हम लोग आपके शासन में बहुत ही सुखी हैं, हमें तो कोई त्रुटि दिखाई नहीं देती।"

उस पर भी राजा को सन्तोष न हुआ। उन्होंने अपने राजसी वस्त्राभूषण उतार दिए और एक साधारण नागरिक के वेष में रथ पर नगर को पार किया। गाँवों का भ्रमण करते हुए यह जानने का प्रयत्न किया कि जनता उनके विषय में क्या सोचती है। उन्होंने कई गाँवों के चक्कर लगाये किन्तु कहीं भी उनके शासन की आलोचना नहीं

जातक कथा

सुनाई दी। वे यह सोचकर बहुत परेशान हुए कि किस प्रकार अपने शासन के बारे में लोगों के विचार जानें।

अन्त में राजा रथ पर सवार होकर राज्य की सीमा पर पहुँचे और सीमा के पथ से होकर राजधानी की ओर लौटने लगे। उस समय काशी नरेश के रथ के सामने से एक और रथ आ निकला। दोनों रथों का एक दूसरे से हटकर बच निकलना सम्भव न था क्योंकि पथ संकीर्ण था और उसके दोनों छोरों पर ऊँची मेड़ें थीं। दोनों रथ थोड़े अन्तराल के साथ आमने-सामने रुक गये।

काशी नरेश के सारथी ने सामने वाले सारथी से कहा, ''हमें आगे जाना है, तुम अपने रथ को पीछे हटा लो।''

''मुझे पीछे हटने के लिए कहने वाले तुम कौन होते हो? तुम्हीं क्यों नहीं अपना रथ हटा लेते?'' दूसरे सारथी ने पूछा।

इस पर दोनों सारथी वाद-विवाद करने लगे। ''जानते हो, इस रथ पर कौन सवार हैं? काशी के राजा हैं!'' काशी नरेश के सारथी ने कहा।

''इस रथ पर कोसल नरेश सवार हैं!'' दूसरे सारथी ने कहा।

काशी राज्य जितना बड़ा था, कोसल राज्य भी उतना ही बड़ा था। वय और विद्या में भी कोसल नरेश काशी नरेश की बराबरी करते थे। वे भी काशी नरेश की भांति छद्म वेश में सारे गाँव घूमकर अपने शासन के प्रति जनता के विचार जानने के लिए निकल पड़े थे। उन्हें यह सोचकर

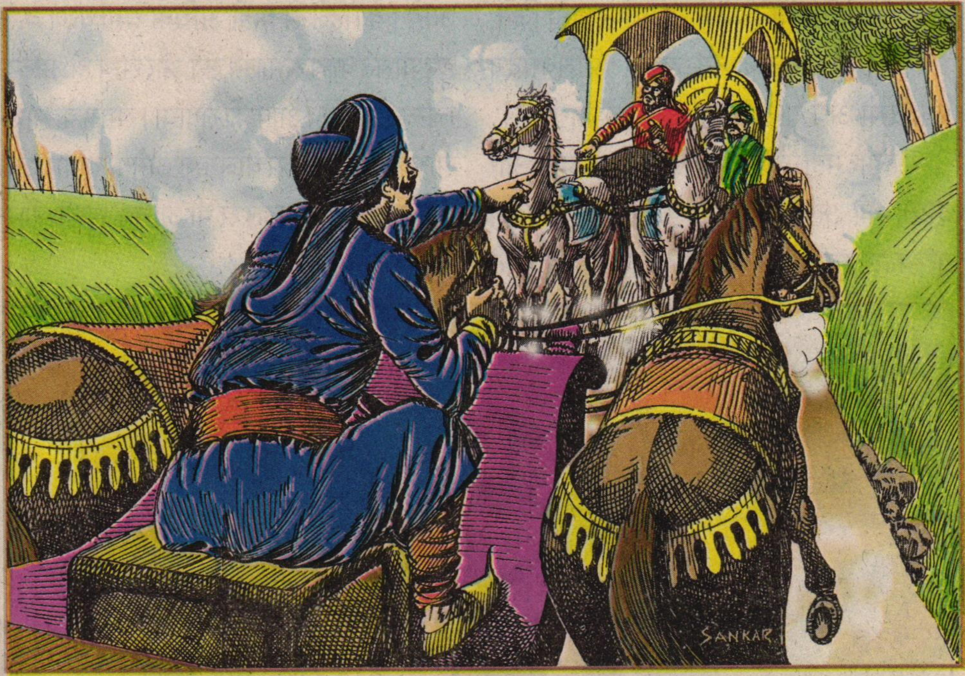

बहुत आश्चर्य हुआ कि उनके रथ को मार्ग न देने वाला यह कौन है। परन्तु वे बिना कुछ कहे स्वयं चुप रहे।

''आपके राजा में ऐसा कौन सा बड़प्पन है?'' काशी नरेश के सारथी ने पूछा।

कोसल नरेश के सारथी ने यों उत्तर दिया:

''दलहं दलहस्य विवपति मल्लिको मुदुना मुदुल साधुंपि साधुना जेति असाधुंपि असाधुना, एतादिसो अयं राजा भग्गा उय्याहि सारथि।।''

(हमारे राजा मल्लिक दुष्टों के लिए कठोर हैं और सज्जनों के साथ सज्जनतापूर्ण व्यवहार करते हैं। सज्जनता के लिए सज्जनता के साथ पुरस्कार देते हैं और दुष्टों को दुष्टता के साथ दबा देते हैं।)

यह सुनकर काशी नरेश के सारथी ने यों कहा:

''अक्कोधेन जिने क्रोध असाधुं साधुना जिने, जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलिवादिनं एतादिसो अयं राजा मग्गा उय्याहि सारथि।''

(हमारे महाराजा क्रोध को शांति के द्वारा और दुष्टता को अपनी साधुता के द्वारा जीतते हैं। पुरस्कारों द्वारा लोभी व्यक्तियों को पराजित करते हैं, झूठ के बदले सत्य प्रदान करते हैं।)

काशी नरेश के सारथी के मुँह से ये शब्द सुनकर कोसल नरेश मल्लिक को कौतुहल हुआ। उन्हें इस बात की प्रसन्नता भी हुई कि एक राजा ऐसा भी है जिसमें राजोचित गुण उनसे अधिक विद्यमान हैं। वे बड़ी आतुरता के साथ रथ से उतर आये और काशी नरेश को प्रणाम करके बोले, ''महात्मा, अभी तक मैं सोचता था कि मुझे कुछ और नहीं करना है, परन्तु आज ज्ञात हुआ कि अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है। और वह सब कुछ मुझे सीखना है आपसे! आज मुझे अपनी त्रुटि का बोध हुआ। उसको दूर करके भविष्य में और अधिक न्यायपूर्वक राज्य करूँगा।''

इसके बाद काशी नरेश अपने नगर को लौट आये। वे पहले से कहीं अधिक धर्माचरण करते हुए शासन कार्य संभालने लगे और साथ ही आत्म-चिन्तन में अपने आप को लगाया। समय के साथ-साथ उनके राज-संचालन में अनेक सुधार आए और उनकी प्रजा पहले से भी अधिक सुखी जीवन बिताने लगी।

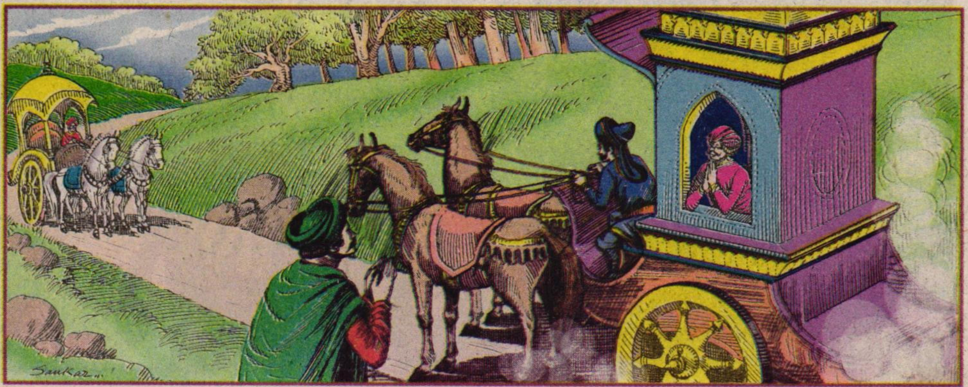

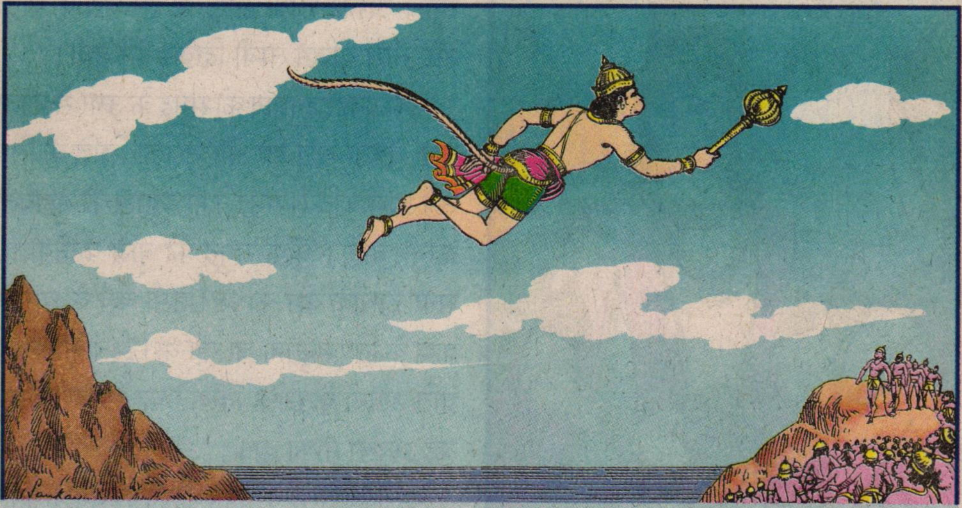

रामायण

जाम्बवन्त के प्रोत्साहन देने पर, हनुमान में असाधारण आत्म-विश्वास और आत्मबल जाग्रत हो गया। उसने निश्चय किया कि वह राम की दी हुई अंगूठी लेकर लंका अवश्य जायेगा और सबसे पहले यह जानने का प्रयास करेगा कि रावण ने सीता को कहाँ छिपा रखा है। वह शरीर को बढ़ाकर, महेन्द्रगिरि पर बड़े बड़े वृक्षों को तोड़ता, पत्थरों को रौंदता, इधर-उधर थोड़ी देर घूमा। जाने से पहले उसने सूर्य, इन्द्र और वायु देवता को नमस्कार किया। फिर महेन्द्र पर्वत पर हाथ पैर रखकर, यकायक उछला। उसके उछलने से महेन्द्रगिरि काँप-सी उठी। उसके पत्थर टुकड़े-टुकड़े हो गये। गुहाओं में रहनेवाली प्राणी आर्तनाद करने लगे। पर्वतों में रहनेवाले विद्याधर आकाश में उड़ने लगे।

हनुमान को समुद्र पार करके जाता देख, ऋषि, चारण, सिद्ध आपस में बातें करने लगे। उन्होंने हनुमान की अद्भुत वीरता की प्रशंसा की और आशीर्वाद दिये।

हनुमान ऊपर उछलकर, ज़ोर से चिल्लाया। एक क्षण आकाश में देखकर फिर पास खड़े जाम्बवन्त आदि से कहा, "मैं राम के बाण की तरह तेज़ी से लंका जाऊँगा। अगर वहाँ सीता न दिखाई दी तो उसी तेज़ी से स्वर्ग चला जाऊँगा। अगर वहाँ भी सीता न मिली, तो वापस लंका चला जाऊँगा। उस रावण को मारकर यहाँ आऊँगा। भाग्य ने साथ दिया, तो सीता को ले आऊँगा। नहीं तो रावण के साथ लंका को उठा लाऊँगा।"

यह कहकर हनुमान आकाश में उड़ गया।

सुन्दर काण्ड - १

हनुमान के वेग के कारण बड़े-बड़े पेड़ उसके पीछे उखड़ गये और कुछ दूर जाकर समुद्र में जा गिरे। उन पेड़ों ने भी उसी तरह हनुमान को पहुँचाया, जिस प्रकार दूर यात्रा पर जानेवालों को बन्धु गण कुछ दूर तक पहुँचाने आते हैं। पेड़ों के गिर जाने के बाद, उनके फूल उड़ते-उड़ते कुछ दूर तक हनुमान के साथ गये और फिर मानों यह शुभ कामना देते हुए समुद्र में गिर पड़े कि तुम्हें राम के काम में सिद्धि मिले।

जब दक्षिण की ओर हनुमान यों जा रहा था, तो उसके हाथों में से निकलनेवाली हवा ज़ोर से शोर करने लगी। ऐसा लगने लगा जैसे आकाश में बवण्डर उठ रहे हों। वह धूमकेतु की तरह लंका की ओर जा रहा था। उसकी गति के कारण, समुद्र में बड़ी-बड़ी तरंगें उठने लगीं, तूफ़ान आने लगा। उसकी छाया समुद्र में दस योजन चौड़ी और तीस योजन लम्बी दिखाई देने लगी।

इस प्रकार हनुमान को समुद्र के ऊपर से जाता देख, देवता खुश हुए और उसकी सिद्धि के लिए उसे आशीष दिये। समुद्र ने भी हनुमान की सहायता करनी चाही। चूँकि समुद्र की वृद्धि करनेवाला, सगर ईक्ष्वाकू वंश का था। उसी वंश के राम के काम के लिए हनुमान जा रहा था। ईक्ष्वाकू वंश के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने का समुद्र के लिए यह अच्छा मौका था।

इसलिए समुद्र ने अपने में छुपे हुए मैनाक पर्वत से कहा, ''तुम्हें पाताल में से राक्षसों को न आने देने के लिए रख रखा था, अब तुम्हें एक छोटा काम बताता हूँ, सुनो। वानर श्रेष्ठ हनुमान राम के काम पर, अत्यन्त साहस के साथ उड़ता इस तरफ़ आ रहा है। चूँकि तुम ऊपर और अगल बगल में बढ़ सकते हो इसलिए तुम ऊपर की ओर बढ़ो ताकि हनुमान को कुछ विश्रान्ति मिल सके। तुम्हारे ऊपर कुछ देर विश्रान्ति करने के बाद हनुमान बाकी रास्ता आसानी से तय कर सकेगा। तुम्हें यह अवश्य करना होगा।''

इस प्रकार सोने का शिखरवाला मैनाक पर्वत समुद्र की इच्छा के अनुसार आकाश की ओर बढ़ा। उसके सोने के शिखर सौ सूर्यों की तरह चमकने लगे।

यकायक रास्ते में मैनाक को बढ़ता देख हनुमान ने सोचा, 'यह कौन है जो अपना आकार बढ़ा रहा है और मेरा मार्ग रोक कर मेरे काम में

बाधा डालना चाहता है।' उन्हें क्रोध आ गया और अपने शरीर को फैला कर उसने अपनी छाती से पर्वत को एक तरफ़ जोर से धकेल दिया।

उस हनुमान को, जिसने इतनी आसानी से उसको एक तरफ़ धकेल दिया था, देख मैनाक बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने मानव रूप धारण करके एक शिखर पर खड़े होकर कहा, "वानर वीर, तुमने दुर्लंघ्य समुद्र को पार करते हुए भी, थके हुए होने पर भी, मुझे गिरा दिया। दरअसल मैं तुम्हारा मार्ग नहीं रोक रहा था, जैसाकि तुमने सोचा होगा। मैं तुम्हें विश्राम देने के लिए ही ऊपर उठ रहा था। मेरे शिखर पर थोड़ी देर विश्राम करो। कभी राम के पूर्वजों और सगर के लड़कों ने समुद्र का बड़ा उपकार किया था। तुम राम के काम पर जा रहे हो, इसलिए समुद्र कुछ प्रत्युपकार करके, अपनी कृतज्ञता जताना चाहता है। समुद्र ने तुम्हें विश्राम देने के लिए कहा है। तुम मुझ पर थोड़ी देर के लिए खड़े हो जाओ। थोड़ा सुस्ता लो। कन्द-मूल खाकर चले जाना। कोई भी अतिथि पूजनीय है। फिर तुम्हारे बारे में, तो कहना ही क्या? तुम बड़े पंडित हो। यही नहीं, वायुदेव के पुत्र हो। मैं वायुदेव का ऋणी हूँ। कृत युग में पर्वतों के पंख हुआ करते थे। वे तेज़ी से हवा में उड़ा करते थे। इसलिए देवता और ऋषि भी उनको देखकर डरा करते थे। तब देवेन्द्र ने पंखों को हज़ारों की संख्या में काट दिये। जब देवेन्द्र ने मेरे पंख काटने चाहे, तो तुम्हारे पिता वायुदेव मुझे बड़ी तेज़ी से उसकी पहुँच से दूर ले गये। उनकी कृपा से मेरे पंख अब

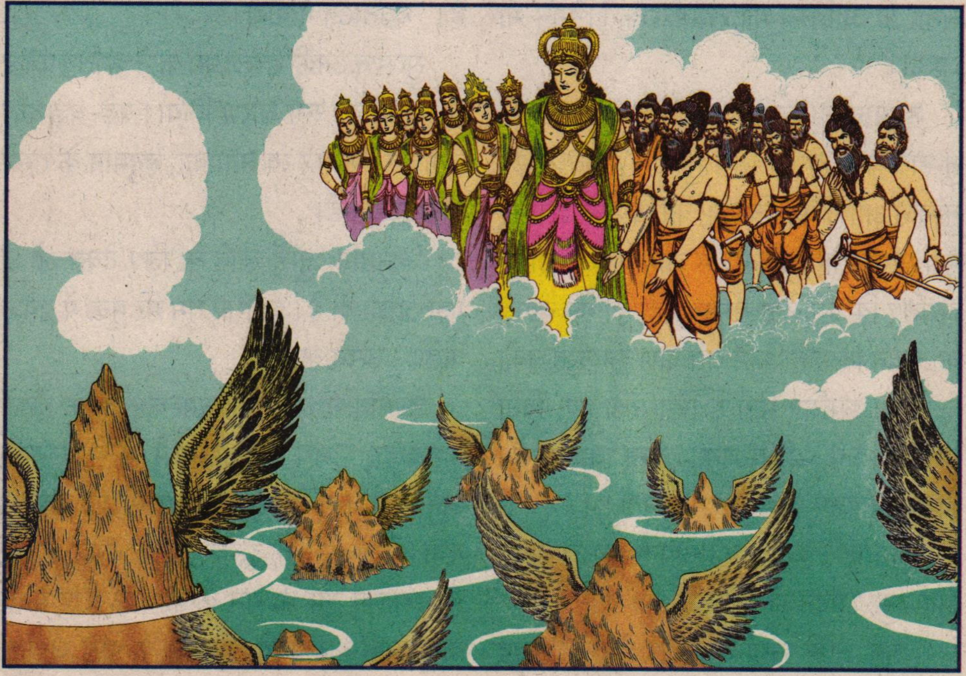

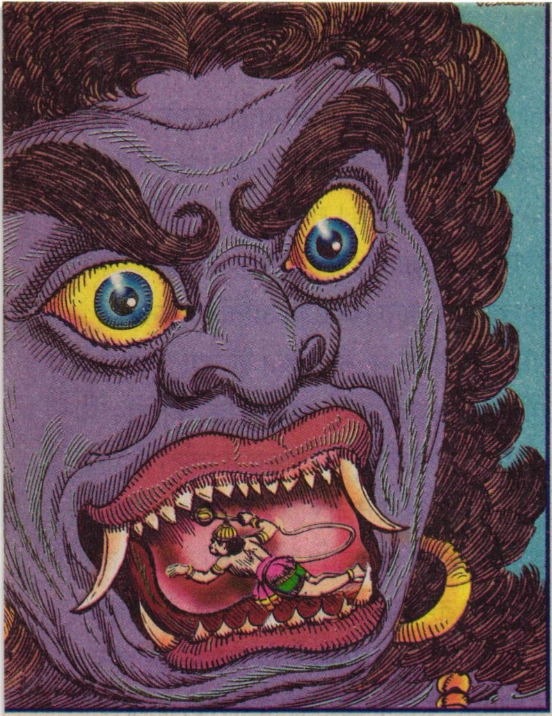

भी सुरक्षित हैं। इसलिए तुम मना न करो, मेरे और समुद्र के आतिथ्य को स्वीकार करो। मान भी जाओ।''

हनुमान ने कहा, ''मुझे बड़ा सन्तोष है। तुम्हारी बातें ही मेरे लिये तुम्हारा आतिथ्य है। तुम्हारा आतिथ्य अस्वीकार कर दिया है, इसलिए मुझ पर गुस्सा न करना। मैं काम पर जा रहा हूँ, इसलिए विश्राम लेना सम्भव नहीं है। मैंने वानरों को वचन दिया है कि मैं राम बाण की तरह लंका जाऊँगा। इसलिए मार्ग में बिना रुके हुए, बिना विश्राम किये, सीधा लंका जाना चाहता हूँ। विश्राम के लिए मेरे पास समय नहीं है।''

हनुमान ने मैनाक को अपने हाथ से छुआ और प्रफुल्ल वदन हो आगे की ओर बढ़ा।

''तुम अपने कार्य में सफल होवो।'' समुद्र और मैनाक ने हनुमान को हृदयपूर्वक आशीर्वाद दिया।

हनुमान वहाँ से आकाश में और ज़ोर से ऊँचा उड़ा।

मैनाक के आतिथ्य को इनकार करके, जब हनुमान लंका की ओर जा रहा था, तो देवताओं ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। इसकी सामर्थ्य की परीक्षा लेकर वे देख लेना चाहते थे कि इसमें कितना बल है। इसलिए वे साँपों की माँ सुरस के पास गये। ''वायुपुत्र हनुमान समुद्र पर से उड़ता लंका की ओर जा रहा है। तुम भयंकर आकार बनाकर उसका रास्ता रोको। हम यह देखना चाहते हैं कि वह तुम्हें जीतता है या तुम से डर जाता है। हम जानना चाहते हैं कि उसका पराक्रम कितना है।'' देवताओं ने कहा।

सुरस ने उनकी इच्छा पूरी करने के लिए पहाड़ से राक्षसी का रूप धारण किया। बड़े-बड़े दाँत लगा कर, भयंकर रंग लगा कर, हनुमान के रास्ते में खड़ी हो गई।

''हनुमान, तुम्हें खाने के लिए देवताओं ने मुझे आज्ञा दी है। इसलिए तुम मेरे मुख में प्रवेश करो।'' उसने कहा।

हनुमान ने सुरस को नमस्कार करके हँसते हुए कहा, ''राम जब बनवास में थे, उनकी अनुपस्थिति में रावण उनकी पत्नी को उड़ा ले गया। मैं अब राम के दूत के तौर पर लंका जा रहा हूँ। इसलिए तुम भी राम के काम के लिए मदद करो। नहीं कहती हो, तो राम के पास जाकर,

उनकी अनुमति पाकर, तुम्हारे मुख में प्रवेश करूँगा। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है।''

सुरस ने इसका जवाब न देकर कहा, ''मुझे कोई भी लाँघकर नहीं जा सकता। मुझे इसका वर मिला हुआ है। जो मेरे मुख के सामने आता है, वह मुझ से बचकर नहीं जा सकता। यह वर मुझे ब्रह्मा ने ही दे रखा है। इसलिए मेरे मुख में प्रवेश करो।'' वह मुख खोलकर हनुमान के सामने खड़ी हो गई।

इस पर हनुमान ने रूठकर कहा, ''तो इतना बड़ा मुख करो कि मैं आसानी से अन्दर चला जाऊँ।'' उसने अपने शरीर को दस योजन बड़ा दिया। तुरंत सुरस ने अपने मुख को बीस योजन बढ़ा कर दिया। हनुमान ने क्रुद्ध हो, अपने शरीर को तीस योजन बड़ा कर दिया। सुरस ने अपना मुख चालीस योजन बड़ा कर दिया। हनुमान ने अपने शरीर को पचास योजन बढ़ा दिया।

इस तरह होड़ करते-करते हनुमान का शरीर नब्बे योजन और सुरस का मुख सौ योजन बढ़ गया।

यकायक हनुमान ने अपना शरीर सूक्ष्म कर लिया। मक्खी की तरह वह सुरस के मुख में घुस गया और बाहर भी आ गया। उसने कहा, '' माँ सुरस, ब्रह्मा का दिया हुआ वर सार्थक हो गया। मैं तेरे मुख के सामने आया था, इसलिए मैंने तेरे मुख में प्रवेश किया, अब मुझे छोड़ दो। सीता के पास जाना है।'' देवता गण हनुमान की वीरता, विनम्रता, चातुरी, व्यवहारकुशलता देखकर बहुत प्रसन्न हुए । उन सबने उसकी सिद्धि की

मनोकामना की और आशीर्वाद दिये। इधर सुरसा भी हनुमान की वीरता से बहुत खुश हुई और उसने राक्षसी का रूप छोड़ दिया। मामूली रूप में आकर हनुमान को आशीर्वाद देते हुए कहा, ''जाओ, तुम्हें विजय मिलेगी। राम और सीता को फिर से मिलाओ।''

हनुमान ने फिर अपनी यात्रा शुरू की। आकाश में उड़ते हुए हनुमान को सिंहक नामक राक्षस जन्तु ने देखा। वह भूखा था। वह उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। उसमें किसी को उसकी छाया से खींच कर पकड़ने की शक्ति थी। हनुमान को खाने के लिए उसने उसकी छाया खींची। हनुमान को यह देख आश्चर्य हुआ कि कोई उसे जोर से पीछे खींच रहा है। जब उसने दोनों तरफ़ देखा, तो उसको समुद्र में सिंहक राक्षस दिखाई दिया।

जब उसने अपनी छाया को घसीटते हुए देखा, तो उसको सुग्रीव की कभी कही हुई बात याद हो आयी। उसने कहा था कि दक्षिण समुद्र में एक विचित्र जन्तु है। वह छाया को पकड़ सकता है। हनुमान ने सोचा कि शायद यही वह जन्तु होगा।

सिंहक की शक्ति के सामने हनुमान का पराक्रम किसी काम न आया। वह सिंहक के बल के सामने अपने को शक्तिहीन महसूस करने लगा। हनुमान ने पूरा बल लगा कर अपने को रोका, फिर भी उसने उसको अपनी ओर खींच लिया। हनुमान ने अपने शरीर को बड़ा कर दिया। सिंहक ने भी उनके अनुसार अपना मुख बड़ा किया। जब उसने यों मुख खोला, तो हनुमान ने उसके मुख के मर्म स्थलों को देख लिया। फिर उसने अपना शरीर छोटा कर लिया। उसके मुख के अन्दर गया। उसके मर्म स्थलों को नष्ट कर दिया और उसके मुख बन्द करने से पहिले ही वह बाहर निकल आया और फिर उसने अपने को बड़ा कर लिया। सिहंक का हृदय फट गया। वह बेहोश होकर पानी पर तैरने लगा।

मरे सिंहक को और मारनेवाले हनुमान को देखकर आकाश में विचरनेवाले भूत बड़े सन्तुष्ट हुए। उन्होंने हनुमान की प्रशंसा की।

हनुमान फिर निकल पड़ा। थोड़ी देर में उसको उधर का समुद्र का किनारा दिखाई दिया। वहाँ जंगल थे। चलते चलते उसको लंका द्वीप और वहाँ के वन-वृक्ष आदि दिखाई देने लगे। नदियों का समुद्र में गिरना भी उसने देखा। इसके अलावा और भी सुन्दर दृश्य देखा।

हनुमान को झट याद आया कि अभी उसका शरीर बड़ा ही है। लंका के राक्षसों ने यदि उतने बड़े शरीरवाले को देखा तो वे हाहाकार करेंगे और सबको बतायेंगे और वह काम, जिस पर वह आया है, बिगड़ जायेगा। इसलिए हनुमान ने अपने शरीर को छोटा कर लिया।

उस शरीर के साथ वह अलम्ब पर्वत पर उतरा। उसकी कई चोटियाँ थीं। उस पर नारियल आदि के बड़े-बड़े पेड़ थे। दूर ऊँचाई पर, त्रिकूट पर्वत पर उसको लंका नगरी दिखाई दी। वह देवेन्द्र की अमरावती की तरह थी।

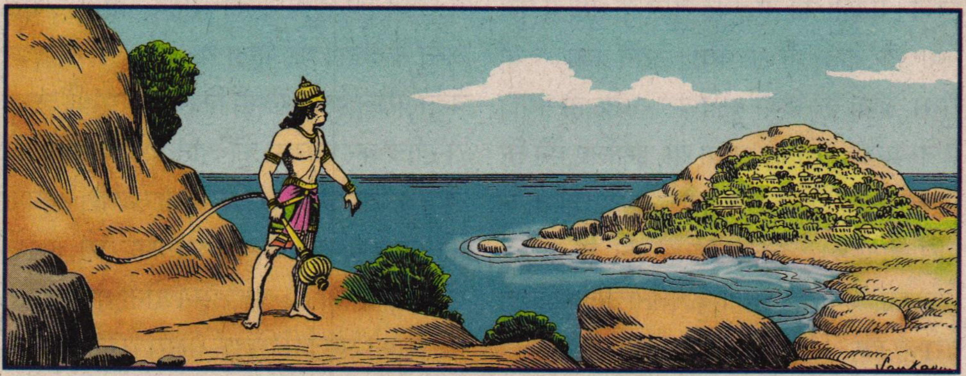

अफवाह

गणपतिसिंह की यह आदत थी कि कोई खास बात हो तो सबसे पहले वह उसका पता लगा ले और सबको सूचना दे! इस जल्दबाजी में वह कई बार ऐसी गलत सलत ख़बरों का प्रचार कर बैठता था, जिससे कोई भी उसकी बातों पर यक़ीन नहीं करता था और दुखी हो जाता था। अपनी बातों पर किसी को विश्वास न करते देख गणपति बड़ी पीड़ा का अनुभव करता था। मगर उसके प्रति लोगों का जो विचार था, उसे बदलने के लिए गणपति ने अनेक प्रयत्न किये, पर वह सफल न हुआ।

एक दिन गाँव में कोई गड़बड़ी हो गई। ऐसी गड़बड़ियों को सुलझाने में पड़ोसी गाँव का पटवारी बड़ा मशहूर था। गाँववालों ने जब पटवारी के पास इस समस्या को सुझाने की ख़बर भेजी तो उसने दूसरे दिन आने की सूचना दी।

जिन दो पक्षों के बीच झगड़ा हुआ था, वे दोनों दूसरे दिन सवेरे पटवारी के इंतज़ार में चौपाल में इकट्ठे हो गये। उन लोगों ने बड़ी देर तक पटवारी का इंतज़ार किया, लेकिन किसी कारण से पटवारी अपने वादे के मुताबिक़ पहुँच नहीं पाया। आखिर झगड़ा करनेवाले दोनों दल के लोग अपने अपने घर चले गये।

पड़ोसी गाँव का पटवारी कभी अपने वचन से मुकरता न था। उसके न आने का कोई बड़ा कारण हो सकता है। गणपति ने सोचा कि सब से पहले वही उस कारण का पता लगा लेगा और गाँववालों को सूचना देगा। यों विचार करके कड़ी धूप में खाने की चिंता तक किये बिना गणपति पटवारी के गाँव की ओर चल पड़ा।

गाँव के बाहर गणपति के सामने से एक लाश आ गुजरी। उसने एक व्यक्ति से पूछा, ''भाई,

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

यह लाश किसकी है? साधारण आदमी की प्रतीत नहीं होती।''

''यह तो इस गाँव के एक बड़े आदमी की लाश है।'' उस व्यक्ति ने कहा।

''इस गाँव का सबसे बड़ा आदमी कौन है?'' गणपति ने फिर पूछा।

''इस गाँव में हमारे पटवारी से बढ़कर कौन बड़ा आदमी है।'' पड़ोसी गाँव के व्यक्ति ने जवाब दिया। गणपति ने सोचा, बेचारे इस गाँव का पटवारी मर गया है। इसीलिए आज सुबह पंचायत करने उसके गाँव में नहीं आया।

यह अनोखी खबर अपने गाँववालों को सुनाने के लिए गणपति दौड़े-दौड़े अपने गाँव को लौट आया। सबको बताने लगा, ''बेचारे आज सवेरे पड़ोसी गाँव के पटवारी का देहांत हो गया है। इसीलिए वे आज हमारे गाँव में नहीं आये। मैंने उनकी लाश को खुद देखा है।''

पर एक भी व्यक्ति ने उसकी इस अनोख़ी खबर पर यक़ीन नहीं किया। इस पर गणपति को बड़ा दुख हुआ। वह सोचने लगा, 'सच्ची बात बताने पर भी लोग उसकी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते? सब के मन में यह विश्वास कैसे पैदा करे कि वह सच्ची बात ही बताता है।'

यों विचार कर उसने लोगों को समझाया, ''भाइयो, पटवारी की मृत्यु पर हमारे गाँव के कुछ बुजुर्ग लोगों को जाकर शोक-संताप प्रकट करना जरूरी है न? इसलिए आप लोग अभी चलिए, सच्ची बात का पता आप लोगों को लगेगा।''

तिस पर भी किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। कुछ लोगों ने गणपति से पूछा, ''तुम

बताते हो कि तुमने पटवारी की लाश देखी है। क्या तुमने कभी पटवारी को जिंदा देखा भी है?''

''ऐसे बड़े आदमी के मरने पर उसकी लाश को पहचानने की ज़रूरत है?'' गणपति ने पूछा।

फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। तब उसने सोचा, उसके गाँववाले पड़ोसी गाँव के मृत पटवारी के प्रति अन्याय कर रहे हैं। इसलिए उसी गाँव के किसी आदमी को बुलवाकर उसके मुँह से यह खबर सुनवा दे तब उसके प्रति गाँववालों की गलत फहमी दूर हो जाएगी।

यों विचार कर गणपति फिर पड़ोसी गाँव के लिए चल पड़ा। रास्ते में एक बुजुर्ग से उसकी मुलाक़ात हो गई। गणपति ने पूछा, '' महाशय, आप तो यक़ीन करेंगे न कि आज सुबह आप के गाँव के पटवारी का देहांत हो गया है?''

''मैं यक़ीन नहीं करूँगा।'' उसने कहा।

''क्यों यक़ीन नहीं करते ?'' गणपति ने आश्चर्य में आकर पूछा।

''क्योंकि मैं ही उस गाँव का पटवारी हूँ।'' उस व्यक्ति ने कहा।

गणपति यह जवाब सुनकर अवाक् रह गया। फिर उस दिन सुबह उसके तथा उस गाँव के एक और व्यक्ति के बीच जो वार्तालाप हुआ था उसे सुनाया। इस पर पड़ोसी गाँव के पटवारी ने समझाया, ''अचानक आज मेरे गाँव के एक बहुत धनी आदमी का देहांत हो गया है। इस कारण मैं तुम्हारे गाँव नहीं जा सका। मेरे गाँव भी में तुम जैसा एक आदमी है। वह झूठ बोले बिना विश्वास करने योग्य झूठ बोलता है। उसने कहा कि मृत व्यक्ति बड़ा आदमी है। और गाँव में बड़ा आदमी मुझे बताया। इन दोनों अर्थों को जोड़कर तुमने सोचा कि मैं ही मर गया हूँ। तुम उसके स्वभाव से परिचित नहीं हो, इसीलिए तुमने उसकी बातों पर यक़ीन किया। पर मेरे गाँव में उसकी बातों पर कोई यक़ीन नहीं करता।''

इस पर गणपति का ज्ञानोदय हो गया। झूठ ध्वनित करनेवाला सत्य बतानेवाले पर कोई यक़ीन नहीं करता, तो सत्य जाने बिना खबरें फैलानेवाले पर कोई विश्वास नहीं करे तो इसमें आश्चर्य क्या है?

For five simple ways to beat the heat and win FABULOUS prizes, log on to www.chandamama.com

LOTTE Lacto King
Pure Milk Pure Ghee

THREAD A STORY

Continue the story teasers in 100 words. Get your friends to rate your contributions and win great prizes.
Age limit: 5-9 years and 10-14 years
To thread your story, log on to www.chandamama.com

DARE TO TELL

Have an adventure to share? Tell it in 5 pictures / illustrations and win fabulous prizes.
Age limit: 12-15 years
To tell your story, log on to www.chandamama.com

MANGO TANGO

Join the big mango debate. Which is the best mango? The contenders are Alphonso, Dasheri, Langra and Banganapalli. Vote now!
Age limit: 10-16 years
To support your favourite mango, log on to www.chandamama.com

WACKY VIDEO PARLOUR

Made a wacky video on your mobile phone or camera? Share your videos and win fabulous prizes.
Age limit: 10-16 years
To submit your video, log on to www.chandamama.com

Bubbaleo

QUIZ OF THE DAY

Answer 5 questions and gain points. Put up your own quizzes and gain more points. The more points you get, the better the rewards.
Age limit: 5-8 years
To start winning, log on to www.chandamama.com

चित्रः गाँधी अय्या
29
अपराजेय गरुड़
गुफा मन्दिर में आप्त पुरुष रवीन्द्रदेव को आदित्य को हाथ-पाँव बांधकर लाने के लिए आदेश देता है। आदित्य के कन्धों पर बैठी चील मन्दिर में प्रवेश करती है, कलश को उठाती है जिसमें नागबन्धु की भस्मी है और उसे यज्ञ कुण्ड में डाल देती है। कुण्ड की अग्नि से एक भयानक जन्तु प्रकट होता है।
नरेन्द्रदेव अग्निकुण्ड से बाहर आने का प्रयास करता है। मदद के लिए उसकी चीख-पुकार से...
...भयानक जन्तु का ध्यान उधर आकर्षित हो जाता है।
नागबन्धु की आत्मा नरेन्द्रदेव की रक्षा के लिए आगे बढ़ने की कोशिश करती है।
अचानक चील पुनः प्रकट होती है और...
...भयानक जन्तु नरेन्द्रदेव के रक्षा करने के लिए जाने में उसका ध्यान भंग करता है।

नरेन्द्रदेव की, मदद के लिए चीख-पुकार, व्यर्थ जाती है।
क्या मेरी मदद करनेवाला कोई नहीं है? हा ! आह !
आदिवासी स्वयंसेवक गुफा-मन्दिर से भाग जाते हैं।
पीछे मत देखो! भागो!
हमारे मालिक का कैसा दुर्भाग्य!
नरेन्द्रदेव का शरीर प्रज्वलित हो गया!
ज्वाला ने जन्तु को अपने आगोश में ले लिया।
आऽऽ घ्र!
जन्तु जल कर राख हो जाता है।
...विक्षिप्त हो जाता है।
आप्तपुरुष आतंकित है और...
मेरे भाग्य में क्या बदा है?
वह भागने की कोशिश करता है, तभी चील...
...उस पर आक्रमण करती है और उसकी आँखों पर झपटती है।
ईऽऽऽऽ...! आ ऽऽऽह!!

चील अपने पंजों में आम पुरुष को पकड़ लेती है... ।
...पर्वत की ओर घसीट कर ले जाती है और उसे गहरी खाई में डाल देती है।
रवीन्द्रदेव चीख पुकार सुन कर पीछे मुड़कर देखता है।
क्या हो रहा है?
आदित्य कहाँ है?
रवीन्द्रदेव अपने ऊपर आते हुए तीरों के आक्रमण से बचकर भागता है।
तीर? ये कहाँ से आ रहे हैं?
वह एक गुफा में प्रवेश करने का प्रयास करता है, किन्तु...
...आदिवासियों द्वारा पकड़ लिया जाता है।
महोदय, हमारे साथ आइये।
मेरे पिता कहाँ हैं?
वे अग्निकुण्ड में जल कर भस्म हो गये।
और आम पुरुष?
उसे चील ले गई!
रवीन्द्रदेव जमीन पर गिरकर बैठ जाता है और मुड़कर देखता है...
आदित्य!

तुम्हें उम्मीद नहीं होगी कि मैं यहाँ मिलूँगा। है न?
मैंने की थी... मैं... था....कृपया मुझे क्षमा कर दो, आदित्य!
अपने सरदार द्वारा भेजे गये आदिवासी युवक गुफा-मन्दिर पर आते हैं। सूर्यपुरी के सैनिक भी मन्दिर पर पहुँचते हैं।
राजकुमार! हमलोगों के सरदार आप के लिए चिन्तित थे और हमलोगों को आप की सहायता के लिए भेजा है।
मैं ठीक हूँ। अच्छा हुआ तुम सब यहाँ आ गये हो।
कमान! इसे चन्द्रपुरी ले जाओ।
मेरे भाग्य में क्या बदा है?
बस्ती का एक आदिवासी सामने आता है।
महोदय, राजा विक्रम सिंह अपनी सेना से मिलने की योजना बना रहा है।
ऐसा है क्या?
उसे बन्दी बना कर चन्द्रपुरी ले जाओ।
गुफा मन्दिर के आदिवासी आदित्य की जय-जयकार करते हैं।
महोदय, आपने दुष्ट शक्तियों से हमें बचा लिया।
यह सारा स्थान अब आप का है हे राजकुमार! मन्दिर की सारी सम्पत्ति भी आप की है। आप से प्रार्थना है कि आप हमारी गिरजा माता के मन्दिर का जीर्णोद्धार करें।
मैं निश्चित रूप से ऐसा करूँगा।
आदित्य आदिवासियों के साथ चन्द्रपुरी के लिए रवाना होता है।
क्रमशः

कोणार्क

भारत के अनेक मन्दिर सूर्य को निवेदित हैं, जिनमें से एक, भुवनेश्वर से ६५ कि.मी. दूर कोणार्क में है। यह एक रथ के आकार में निर्मित किया गया है जिसमें दोनों ओर १२-१२ पहिये हैं और इसे ७ घोड़े खींच रहे हैं।

मन्दिर २६१ मी. लम्बा तथा १६० मी. चौड़ा है। इसकी स्थिति पूरब-पश्चिम की ओर है। राजसी ठाट में बना यह मन्दिर अपने भव्य विस्तार, दोषरहित निर्माण तथा वास्तुकलात्मक शान-शौकत के लिए विख्यात है। अन्दर-बाहर सभी दीवारों की हर सतह पर तथा पहियों पर बनी पशु और मानव की आकृतियों में ऐसी स्वाभाविक बनावट है जिससे अन्य मन्दिरों से, खासकर उड़ीसा में प्रचुर मात्रा में हिन्दू पूजा के स्थलों में फैले मन्दिरों से कोणार्क मन्दिर को श्रेष्ठ माना जाता है।

इसका निर्माण पूर्वी गंगा वंश के राजा नरसिम्हादेव (१२३८-६४) द्वारा १३ वीं शताब्दी में किया गया था। काले ग्रेनाइट में निर्मित होने के कारण इसे काला पगोडा भी कहा जाता है। इसके निर्माण में १२ वर्ष लगे और १,२०० शिल्पियों ने काम किया। राजा ने देखा कि इसके निर्माण के खर्च पर राज्य का कोष खाली हो रहा है, इसलिए उन्होंने प्रधान वास्तुकार बीसू महाराणा को जल्दी ही निर्माण पूरा करने का आदेश दिया। कहा जाता है कि जब शिल्पी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये कि मन्दिर के शिखर पर मुण्डेर बनाने के लिए पत्थर कैसे रखें तब बीसू के १२ वर्षीय बालक ने, जो वास्तुकला से अपरिचित था, जो तरीका बताया, वह काम कर गया।

यूनेस्को ने कोणार्क मन्दिर की अनोखी कलात्मक उपलब्धि को मान्यता देते हुए इसे विश्व धरोहर स्थल का दर्जा १५ अक्तूबर १९८२ को दिया। भारत के राजकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कोणार्क देखने के बाद कहा, ''यहाँ पत्थर की भाषा ने मनुष्य की भाषा को मात कर दी।''

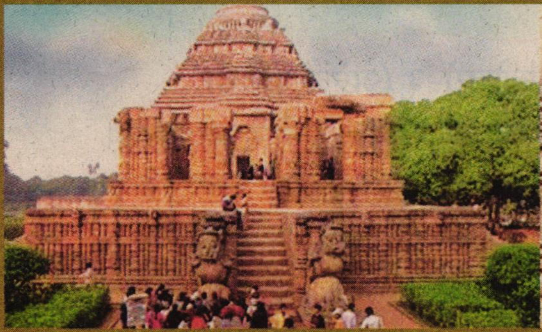

बच्चे अखबार की सुर्खियों में

शान्ति-पुरस्कार

अन्तर्राष्ट्रीय बाल शान्ति पुरस्कार -२००७ जाम्बिया के थांडिवे चामा (१६) को दिया गया है। अपने देश के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करने के प्रयासों के लिए तथा बेहतर स्कूली सुविधाओं के लिए आन्दोलन चलाने के लिए यह सम्मान उसे दिया गया है। उसने यह आन्दोलन तब शुरू किया जब उसका अपना स्कूल अध्यापकों के अभाव में बन्द कर दिया गया। तब वह ८ वर्ष की थी। पुरस्कार राशि एक लाख यूरो है।

सर्वोत्तम अभिनेता एक बालक

जब भी फिल्म पुरस्कारों की घोषणा की जाती है, बाल कलाकारों के लिए अलग पुरस्कार होता है। आठ वर्षीय दरशेल सफारी को, जिसने 'तारे जमीन पर' हिन्दी फिल्म में अभिनय किया है, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है; इस प्रकार सिनेमा जगत में एक नया इतिहास रचा गया है। मुम्बई की एक लोकप्रिय फिल्म पत्रिका द्वारा संस्थापित पुरस्कारों के लिए 'चक दे इण्डिया' तथा 'ओम शान्ति ओम' में अभिनय करनेवाले शारुख खान तथा अन्य मूवी दिग्गजों जैसे अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार तथा शाहिद कपूर के नामांकन भी प्राप्त किये गये हैं। 'तारे जमीन पर' में दूसरे मुख्य अभिनेता आमीर खान का नामांकन सपोर्टिंग ऐक्टर की श्रेणी में किया गया है।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-३ (अप्रैल २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ४९ में दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

आप के पन्ने

विज्ञान तुम्हारे लिए

कंघी की कथा वस्तु

कौन कहता है कि कंघी बालों को केवल साफ-सुथरा और सजा कर रखने के लिए है? स्पष्ट है कि बालों के अलावा इसमें कुछ और राज़ है। उड़ीसा की एक जन जाति जुआंग के लोग अपने प्रेम सम्बन्धों में कंघी को प्रेम का प्रतीक मानते हैं। विवाह के उत्सवों में भी इसकी अहम भूमिका होती है। सामुदायिक त्योहारों पर जुआंग लड़के अपने साथ नाचने वाली जोड़ी को कंघी भेंट करते हैं। और यदि कोई जुआंग लड़की किसी युवक को प्यार करने लगती है तो उसकी कंघी भी चुरा सकती है-जो अपना प्यार जाहिर करने का उसका एक प्रच्छन्न तरीका होता है। जुआंग दूल्हा विवाह के समय दुलहिन को कंघी भेंट करता है। अनुमान करो यह किसलिए? निस्सन्देह दूल्हे के बाल की कंघी करने के लिए!

तुम्हारा परिवेश

चिड़ियों को बिजली का करेण्ट क्यों नहीं लगता?

"**नं**गे तारों को न छूना अथवा बिजली के खम्भों के सहारे खड़े न होना; बिजली के करेण्ट से मर जाओगे।" हम सब इस चेतावनी से परिचित हैं। इसलिए क्या यह एकदम आश्चर्यजनक नहीं लगता जब हम ऊँचे वोल्टेज के बिजली के तारों पर पक्षियों को बैठे देखते हैं, पर उन्हें करेण्ट नहीं मारता।

पक्षी, तार के साथ न केवल सर्किट बनाता है, बल्कि बिजली का अवरोध भी करता है, इसलिए बिजली, पक्षी के स्थान पर, तार से होकर गुजरती है। हाई टेंशन तारों पर बैठे पक्षी के दोनों पैर एक ही तार पर दृढ़ता से जमे रहते हैं, इसलिए पक्षी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक का शुद्ध अन्तर्निहित अन्तर सभी उद्देश्यों के लिए नहीं के बराबर होता है। पक्षी से होकर बिजली प्रवाहित होने के लिए वोल्टेज में शरीर के पार काफी अन्तर होना चाहिये।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

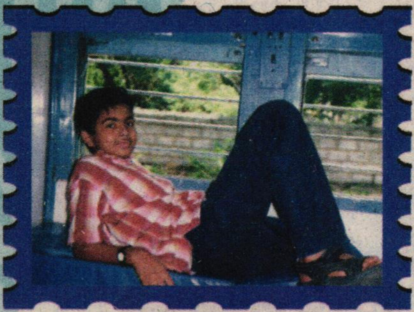

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अक्षित आदित्य तिलक राज गुप्ता
मकान नं. २४४९/१३,
मुकन्द लाल नेशनल कॉलेज के साथ
रादौर - १३५१३३
हरियाणा

विजयी प्रविष्टि

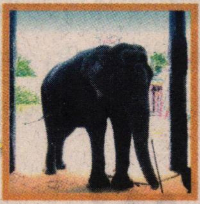

जंजीर में जकड़ा है हाथी।
आजाद मोर पर, छायी मस्ती।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. नसरत शाह, बंगाल का शासक; २. पुरन्दर दास; ३. हठ योग;
४. अश्वघोष, बुद्ध चरित; ५. वराहमिहिर।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**

VALOUR & ADVENTURE HUMOUR & MYSTERY MORALS & HEROES

Enthralling stories of six decades come together
in one incomparable collection

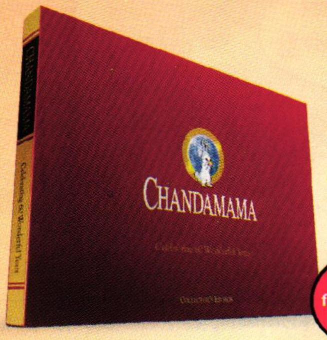

The Chandamama
60th Anniversary Collector's Edition
HARD COVER
Cover Price : Rs 449

Special price for subscribers Nett. Rs. 360

CHANDAMAMA
COLLECTOR'S EDITION

Take a trip down memory lane with the magazine's oldest editors, discover the beginnings of Chandamama and view some of the most memorable cover art across the decades.

Subscribers must fill in the order form below to avail of special discount.

I want a copy of the Chandamama Collector's Edition.

Name .... Subscriber No ....

Address ....

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees (in words) ....

Cheque/DD no .... Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. *(Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)*

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com
Web: www.chandamama.com *This offer is valid until June 30, 2008 only. Allow 3 weeks for delivery.

CHANDAMAMA (Hindi) June 2008 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08